प्रथम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्!, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ॥
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 1॥

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ॥
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 2॥

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ॥
जन्म-जन्म में जैनधर्म यह, मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 3॥

मरण समय गुरु-पादमूल हो, सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ॥
भव-भव में संन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 4॥

बाल्यकाल से अब तक मैंने, जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो ॥
श्वास-श्वास अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 5॥

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को ।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो ॥
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय धर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 6॥

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो ।
रत्नत्रय संयम की शुचिता, हृदय सरलता दो ॥
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का, पाठ हृदय भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 7॥

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ ॥
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 8॥

तेरे चरण कमल-द्वय जिनवर ! रहें हृदय मेरे ।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे ॥
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 9॥

मैंने जो जो पाप किए हों, वह सब माफ करो ।
खड़ा अदालत में हूँ स्वामी, अब इंसाफ करो ॥
मेरे अपराधों को गुरुवर, आज क्षमा कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 10॥

दु:ख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि-लाभ वर दो ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दो ॥
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 11॥

कालजयी रचना
के रचयिता
महाकवि

द्वितीय पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

अहो अकिंचन मैं हूँ मेरा, इस जग में क्या है ?
मेरे गुण तो मेरे भीतर, बाहर में क्या है ॥
यह रहस्य परमात्म कला का, पूर्ण उजागर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 12॥

मैं पवित्र हूँ मैं प्रसन्न हूँ, पूर्ण स्वस्थ हूँ मैं ।
ज्ञानवान हूँ ध्यानवान हूँ, आत्मस्थ हूँ मैं ॥
आत्मक्रिया चिन्तन-मन्थन में, निज मन तत्पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 13॥

बिन भोगे ही भव भोगों को, त्यागा धन्य वही ।
भोग बुरे लख जिनने त्यागे, वे सब धन्य मही ॥
मोह रहित जप, ज्ञान सहित तप, त्याग निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 14॥

भव-भव में मुनिराज बनूँ मैं, यही भावना है ।
भव-भव में जिनधर्म गहूँ मैं, यही भावना है ॥
बाल ब्रह्मचारी मुनि होऊँ, रत्नत्रय वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 15॥

मैं तप धारूँ मैं श्रुत धारूँ, सम्यक् व्रत धारूँ ।
धर्मध्यान में रत होकर के, शुक्लध्यान धारूँ ॥
शुक्लध्यान में कर्म जलाऊँ, जाना शिवपुर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 16॥

मैं कैसा हूँ केवलज्ञानी !, जैसा तुम जानो ।
मैं वैसा हूँ अंतर्यामी !, जैसा तुम मानो॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तुम अविनश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 17॥

उत्तम त्यागी वे हैं जिनने, अर्जन नहीं किया ।
मध्यम त्यागी वे हैं जिनने, अर्जित त्याग किया ॥
जघन्य त्यागी सौंप संपदा, सन्त दिगम्बर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 18॥

भव अनन्त के भ्रमण चक्र को, आज रोकता हूँ ।
देव शास्त्र गुरुवर के चरणों, माथ टेकता हूँ ॥
अब निर्दोष तपस्या का फल, सिद्ध परम पद हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 19॥

ना जाने कब तेरे दर से, चलना हो जाये ।
किस विधि फिर से दर्शन पाना, दुर्लभ हो जाये ॥
उत्तमार्थ प्रतिकर्म करूँ मैं, सर्व दोष हर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 20॥

चन्द्रप्रभ भगवान हमारे, हमको चारित दो ।
चरण कमल की करूँ वन्दना, मन पवित्र कर दो ॥
श्री सम्मेद शिखर का दर्शन, हमको फिर-फिर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 21॥

नंदीश्वर के दर्शन पाऊँ, पंचमेरू जाऊँ ।
श्री विदेह में तीर्थंकर के, समवशरण जाऊँ ॥
उड़ जाऊँ निर्वाण लक्ष्य तक, प्रभुवर वह पर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 22॥

गुरु चरणों
विनय से बैठे
आचार्यश्री

तृतीय पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

एक मात्र जिनभक्ति आपकी, है समर्थशाली ।
दुर्गति रोधक सन्मति बोधक, महापुण्यशाली ॥
शाश्वत मोक्ष महल की चाबी, संस्तुति जिनवर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 23॥

शील सहित नर भी मरता है, शील रहित मरता ।
धैर्य सहित नर भी मरता है, धैर्य रहित मरता ॥
शील सहित हो धैर्य सहित हो, वह समाधि वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 24॥

ज्ञान भावना दर्श भावना, चरित भावना हो ।
ये तीनों तो आत्मरूप हैं, आत्मभावना हो ॥
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, प्रतिपल संवर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 25॥

अरिहंतों को नमन हमारा, सिद्ध नमन मेरा ।
सूरि पाठक साधुजनों को, नित्य नमन मेरा ॥
पंच परम परमेष्ठी हमारे, पंच पाप हर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 26॥

अरिहंतों का पहला मंगल, सिद्धों का दूजा ।
साधुजनों का तीजा मंगल, धर्म कहा चौथा ॥
चारों मंगल मेरा जीवन, मंगलमय कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 27॥

अरिहंतों का पहला उत्तम, सिद्धों का दूजा ।
साधुजनों का तीजा उत्तम, धर्म कहा चौथा ॥
चारों उत्तम मेरा जीवन, सर्वोत्तम कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 28॥

अरिंहतों की पहली शरणा, सिद्धों की दूजी ।
साधुजनों की तीजी शरणा, धर्म शरण चौथी ॥
चारों शरणा भय दुःख हरणा, मुझे शरण रख लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 29॥

गुरु से मुझको मिला है कितना, क्यों इतना सोचूँ ।
मैंने कितना किया समर्पण, बस इतना सोचूँ ॥
सेवा और समर्पण प्रतिपल, बढ़ते क्रम पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 30॥

संयम भाव जगाना गुरुवर ! काम तुम्हारा है ।
संयम पालन करना गुरुवर ! काम हमारा है ॥
अब तो प्रतिपल प्रतिपग मेरा, संयम पथ पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 31॥

संयम पथ निर्बाध बनाओ, मेरे गुरुवर जी ।
मोक्षमहल तक साथ निभाओ, मेरे प्रभुवर जी ॥
उपसर्गों में बाधाओं में, कभी नहीं डर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 32॥

चलते-फिरते प्राण हमारे, श्री गुरुवर मेरे।
धर्मपिता की गोद में खेले, हम बालक तेरे॥
धर्मपुत्र के पालन में तुम, गुरु गोवर्द्धन हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 33॥

गुरु एवं गुरु भाई
के साथ
विहार-रत् गुरुवर

चतुर्थ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

चिंतन दे गुरु हृदय दिया है, श्रुत दे कान दिए।
राह दिखाकर आँखे दी हैं, संयम प्राण दिए॥
ऐसे गुरु-पद चिदानंद का, झरना झर-झर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 34॥

मैं क्या चाहूँ नाथ आपसे, कहाँ समाधि हो।
जहाँ हमारे गुरु विराजें, वहाँ समाधि हो॥
पार्श्वनाथ का समवशरणथल, श्री नैनागिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 35॥

पुण्यार्जन की सरल विधि है, अनुमोदन करना।
शुभकार्यों का सम्पादन कर, पुण्य कोष भरना॥
आराधन की अमर पताका, मेरे कर में हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 36॥

यह रत्नत्रय परम-सम्पदा, सबको उपयोगी।
जो रत्नत्रय पालन करते, दुर्लभ वह योगी॥
भेदज्ञान पौरुष प्रकटाऊँ, शुद्ध चिदम्बर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 37॥

जौ लौं जरा रोग ना आये, तौ लौं तप कर लूँ।
ओम् नमः अर्हम् सोहं का, जप ही जप कर लूँ॥
महामंत्र की महाशक्तियों, से मन मंत्रित हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 38॥

उद्गम थल से जैसे सरिता, पतली सी बहती।
सागर तट लौं बहती जाती, बढ़ती ही बढ़ती॥
इसी तरह मेरा आतम-गुण, बढ़ते क्रम पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 39॥

भाव शुद्धि ही शुभ समाधि है, भाव शुद्ध कर लूँ।
जैसा श्रम हो वैसा क्रमशः, कम अहार कर लूँ॥
धर्मध्यान में रहे लीनता, तप अभ्यन्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 40॥

चार बरस लौं कायक्लेश तप, आगे रस तजना।
चार बरस लौं रस तज-तज कर, रसना वश करना॥
शेष उम्र तप भात मठा ले, जल पानक पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 41॥

तेरे गुण की याद दिलातीं, तेरी प्रतिमाएँ।
इसीलिए हम आकर करते, दर्शन पूजाएँ॥
वीतराग भावों की जननी, प्रतिमा जिनवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 42॥

बादल बरसें वन खण्डों में, तरु-पतियाँ होतीं।
पुण्योदय से राजकोश में, नव निधियाँ होतीं॥
पुण्यफला अरिहंत-परम-पद, आप जिनेश्वर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 43॥

समतामय हो तपो-भावना, तत्त्व-भावना हो।
समतामय एकत्व-भावना, सत्त्व-भावना हो॥
समतामय हो धैर्य-भावना, व्रत समता धर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 44॥

सभी गुरु भाईयों
के साथ
गुरुवर जी

पंचम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

प्रतिक्रमण से आत्मशुद्धि हो, श्रुत से बुद्धि बड़े।
सामायिक से बड़े विशुद्धि, तप से ऋद्धि बड़े॥
आत्म-साधना बढ़ती जाये, मन पवित्रतर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 45॥

पापास्रव कारक भावों को, नहीं उपजने दूँ।
गुरु निन्दा के बीज हृदय में, नहीं पनपने दूँ॥
मानस-विनयाचार हमारे, अन्तर्मन भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 46॥

गुरु को प्रिय गुरु को हितकर हो, वही भाव भाऊँ।
श्री गुरु के अनुकूल चलूँ मैं, गुरु पद ही ध्याऊँ॥
गुरु-कृपा का पात्र बनूँ मैं, विनय गुणोत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 47॥

ज्यों चलनी में नहीं ठहरता, भरा हुआ पानी।
चंचल-मन में नहीं ठहरता, यम-संयम ज्ञानी॥
श्रद्धा श्रुत, दृढ़ संकल्पों से, यह मन सुस्थिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 48॥

कर्मोदय की पराधीनता, हित कैसे साधूँ।
चारों आराधन भी निर्मल, कैसे आराधूँ॥
मृत्युरूप इस वज्रपात पर, विजय अनुत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 49॥

शुभ-भावों में नित-निमित्त हैं, जिनवर प्रतिमाएँ।
अतः उन्हीं का आलम्बन लें, जिन महिमा गाएँ॥
अंत समय तक मेरे सम्मुख, प्रतिमा जिनवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 50॥

चंचल मन है पवन वेग सा, कौन दिशा जाये?
चंचल मन है दुष्ट अश्व सा, कहाँ गिरा आये?
चंचल मन के वशीकरण को, नित भक्तामर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 51॥

देख न पाया, सुन ना पाया, बोल नहीं पाया।
तृष्णा-सरिता में डूबा मन, हित ना कर पाया॥
मन संयम का महामंत्र गुरु, कानों में भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 52॥

सम्यग्दर्शन में निमित्त है, पावन जिनवाणी।
सूरी, पाठक, साधु संघ वा, गुरु सम्यग्ज्ञानी॥
सम्यग्दर्शन लेकर जाऊँ, यही धरोहर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 53॥

मनोवती सी दर्श-प्रतिज्ञा, नाथ! अटल करलूँ।
पद्मरथी सम उपसर्गों को, सह आगे बढ़लूँ॥
बाहुबली भगवान आप सी, मूर्ति मनोहर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 54॥

राग द्वेषमय अशुभ भाव कर, जग हिम्मत हारा।
मन के रोके रुक जाता है, राग-द्वेष सारा॥
निश्चल मन से महामंत्र का, जाप जिनेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 55॥

श्रमणों की सल्लेखना कराते निर्यापकाचार्य जी

षष्ठम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

यथा काल हो, यथा देश हो, यथा संघ होवे।
वैसा सन्त नियोगी पाकर, मन प्रमुदित होवे॥
यत्नाचारी-सन्त-शरण में, आत्म सर्मपण हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 56॥

आप विरागी हम अनुरागी, सब सहभागी हों।
नैया पार लगाने वाले, यति बड़भागी हों॥
उद्योतन, निर्वाहन, साधन, शुभ संस्तर पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 57॥

सर्व संघ से हाथ जोड़कर, क्षमा माँगता हूँ।
गुरु साक्षी में सर्व पाप को, आज त्यागता हूँ॥
क्षमा मूर्ति गुरुदेव हमारे, क्षमा-भाव भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 58॥

श्रावक-व्रत या साधु-व्रत धर, जो समाधि करता।
सुनो समाधि के फल से वह, स्वर्गों में रहता॥
संकल्पों से सुर कल्पों में, देव अनुत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 59॥

जो समाधि में रुचि रखता है, वह समाधि पावे।
दर्शन-ज्ञान-चरित की महिमा, तन-मन से भावे॥
सल्लेखन का समाचार पा, तन-मन हर्षित हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 60॥

शल्य रहित हो क्षपकराज बन, सल्लेखन कर लूँ।
निर्मल रत्नत्रय पालन कर, शुद्ध भाव धर लूँ॥
जिज्ञासा के समाधान तुम, हर प्रश्नोत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 61॥

जहाँ-जहाँ हो सन्त समाधि, वहाँ-वहाँ जाऊँ।
क्षपक राज के दर्शन करके, अनुमोदन भाऊँ॥
श्रेष्ठ समाधि करने वाला, नर तीर्थंकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 62॥

विराग सागर गुरुवर कहते, निभो-निभाओ जी।
सन्मति सागर गुरुवर कहते, तपो-तपाओ जी॥
गुरु आज्ञा को शिरोधारना, आतम हितकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 63॥

कलिकाल यह पापकाल है, हृदय कलुषता है ।
सम्यक् श्रोता सम्यक् वक्ता, की दुर्लभता है ॥
प्रभावशाली जिन शासन की, प्रभुता सुखकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥64॥

दया, दमन अरु त्याग समाधि, चार थंभ वाला ।
नय प्रमाण युत श्री जिन शासन, सबको सुखवाला॥
तेरा मत जिन! अद्वितीय मत, सदा शुभंकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥65॥

द्रव्य क्षेत्र का काल भाव का, निज प्रभाव पड़ता ।
जड़ का जड़ पर,जड़ चेतन पर,चेतन पर जड़ का ॥
यह निमित्त अरु उपादान की, चर्चा हितकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 66॥

गुरु चरण धोते
मानों कर्म धोते
हुए गुरुवर

सप्तम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

निर्विकल्प निर्द्वन्द रहूँ मैं, यही भावना है ।
शुद्धातम का संवेदन ही, आत्म साधना है॥
समता समता समता धरना, भाव निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 67॥

भावों में निर्मलता रखना, श्रेष्ठ सफलता है ।
निर्मलता में शुक्ल ध्यान हो, शिवपद मिलता है ॥
निर्विकार चैतन्य आत्मा, स्वयं शिवंकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 68॥

समता मंदिर ! स्वातम सुन्दर ! शुद्धातम योगी !
सन्त दिगम्बर! शुद्ध चिदम्बर! समरस सुख भोगी॥
सर्व साधु जयवंत रहे नित, मंगलमय स्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 69॥

नियम न तोडूँ , धर्म न छोडूँ, पाप नहीं जोडूँ ।
संकल्पों से मुँह ना मोडूँ, मोह नहीं ओढूँ॥
यही धारणा वीर प्रतिज्ञा, आतम अन्दर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥70॥

लज्जा, भय, गारव को तज के, निश्छल हो करके ।
अपने दोष निवेदन करलूँ, गुरु चरणों रहके ॥
मात-पिता सम गुरु हमारे, सभी दोष हर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 71॥

प्रियधर्मा हो दृढ़ धर्मा हो, धर्मातम धीरु ।
संवेगी वैरागी त्यागी, सदा पाप भीरु ॥
अभिप्रायों को जानने वाला, यति निर्यापक हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 72॥

अरे प्रमाणाभासों द्वारा, नहीं ठगा जाऊँ ।
कौन प्रवक्ता क्या प्रमाण है, सही समझ पाऊँ ॥
"सम्यग्ज्ञान प्रमाणम्" गुरुवर, न्याय भास्कर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 73॥

मोक्षमार्ग तो एक मार्ग है, किस विधि कौन चले ।
पता नहीं चलने वाले को, क्या-क्या कहाँ मिले ॥
चुनना, चलना, चलते रहना, यह साहस भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 74॥

अन्तर आतम के अन्तर में , क्या अन्तर पड़ता ।
वंदन बंधन बाधाओं में, समता ही समता ॥
इस विधि ही परमात्म बनूँगा, लक्ष्य सफल कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 75॥

छेदा जाऊँ, भेदा जाऊँ, या बाँधा जाऊँ ।
जहाँ-तहाँ ले जाया जाऊँ, या खाया जाऊँ ॥
तो भी मेरा नाश नहीं है, दृढ़ श्रद्धा भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 76॥

किसी के माथे सिगड़ी जलती, सिंह प्राण खाये ।
किसी-किसी को गरम-गरम, आभूषण पहनाये ॥
मैं अविनाशी अमर आत्मा, शुभ चिंतन भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 77॥

जननी का जन्म
सार्थक किया
गुरुवर नें
दीक्षा देकर

अष्टम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

सिद्ध अनंतानंत हुए हैं, क्या-क्या सह करके ।
पीड़ाओं में पूजाओं में, दृढ़ समता धरके ॥
पीड़ा भी परमात्म बनाती, सत्य कथन कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 78॥

जैन न्याय सिद्धान्त शास्त्र पर, होवे दृढ़ श्रद्धा ।
कोई नहीं किसी को देता, कर्म बिना बाधा ॥
परमातम का यह उपाय भी, आतम अन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 79॥

खेतों में हरियाली होवे, जन-जन खुशहाली ।
रक्षाबन्धन पर्यूषण हो, घर-घर दीवाली ॥
तीन लोक के सब जीवों में, शान्ति-शान्ति भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 80॥

धर्म राह में पाप कमाया, शान्ति मिले कैसे ?
गुणी जनों में दोष लगाया, शान्ति मिले कैसे ?
सकल कर्म क्षय करने वाला, धर्म निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 81॥

चित्त शुद्धि से धर्म ध्यान कर, मन को शान्ति मिले ।
वचन शुद्धि से भक्ति पाठ कर, वाचा शान्ति मिले॥
णमोकार से काय शुद्धि कर, निर्विकार कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 82॥

धन्य-धन्य हो जाये मेरा, यह नर भव पाना !
धन्य-धन्य हो जाये मेरा, सन्त शरण आना ॥
ओम् नमः सिद्धाय जपूँ में, जय सिद्धीश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 83॥

गुण सुमरण से गुण धारण में, रुचि पैदा होती ।
गुण रुचि ही गुणवान बनाती, दृढ़ श्रद्धा बोती ॥
श्रद्धा बढ़ते वात्सल्य गुण, हर इक घर में हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 84॥

कस्तूरी की गंध शपथ ले, ऐसा कब होता ।
वीतराग को कर्म बन्ध हो, ऐसा कब होता ॥
वीतरागता का अनुयायी, शुभ से शुभतर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 85॥

आगे कदम बढ़ाकर भगवन् ! पीछे नहीं हटूँ ।
मोक्ष मार्ग में वीर पुत्र सा, कृत संकल्प डटूँ ॥
सदा श्रमण सर्वत्र संयमी, भाव उच्चतर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 86॥

जल में आये, थल में आये, या नभ में आये ।
कौन बताये किसका अन्तिम, समय कहाँ आये ॥
जब भी आये, जहाँ भी आये, शिर पर गुरु कर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 87॥

निज स्वरूप में लीन हुआ है, जिसका मन प्यारे ।
उसके चरणों में नतमस्तक, भुवनत्रय सारे ॥
समय-समय में समयसार का, संवेदन भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 88॥

ईर्यासमिति पूर्वक
चलते आचार्य श्री

नवम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

ज्यों कमलों को करें प्रफुल्लित, रवि किरणावलियाँ।
त्यों भव्यों को करें प्रफुल्लित, गुरु वचनावलियाँ ॥
प्रसन्नता और प्रीति झरेगी, प्रवचन गुरुवर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 89॥

मैं एकाकी अरस अरूपी, सिद्ध स्वरूपी हूँ ।
दर्शन ज्ञान मयी शुद्धातम, चिद् चिद्रूपी हूँ ॥
निर्विकल्प का निजानन्द रस, निज में निर्भर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 90॥

ये मत सोचूँ जीवन पथ में, बाधा ना आयें ।
इतना सोचूँ बाधाओं पर, कैसे जय पायें ॥
जितनी-जितनी समता जागे, उतना संवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 91॥

कोई फूल चढ़ाये चरणों, पूजा पाठ रचे ।
कोई सर्प गले में डाले, या अपशब्द कहे ॥
उन दोनों में समता धारी, सन्त मुनीश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 92॥

पर द्रव्यों से मोह लगाया, किस विध खोऊँगा ।
ना ये मेरे ना मैं इनका, हुआ न होऊँगा ॥
आत्म द्रव्य मैं हूँ, मेरा है, समयसार स्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 93॥

तजूँ मोह को, तजूँ मोह को, रहूँ ज्ञान रसिया ।
पर से कुछ सम्बन्ध नहीं मैं, सिद्धालय बसिया ॥
यही अटल सिद्धान्त हमारा, शाश्वत दृढ़तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 94॥

सन्त साधुओं द्वारा सेवित, भूमि तीर्थ कही ।
तो फिर बोलो क्षपकराज तुम ! कैसे तीर्थ नहीं ॥
निज स्वरूप का वन्दन करके, सभी तीर्थ कर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 95॥

सर्व जगत के जीव अनंता, मेरे उपकारी ।
यही भावना मित्र भावना, हो मंगलकारी ॥
रागद्वेष है दुःख का कारण, अतः इसे हर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 96॥

मैंने मोक्षमहल पाने का, लक्ष्य बनाया है ।
माना मोक्षमहल की सीढ़ी, गुरुपद छाया है ॥
ज्ञान रूप जल, तप का भोजन, मंगल पथचर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 97॥

जगत भरा है आलम्बन से, धर्म ध्यान ध्याओ ।
शब्द राशि का पार नहीं है, गुण गाथा गाओ ॥
मन की चिन्ता विपदा पीड़ा, सब छू मन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 98॥

जितना सुख दे जिनवाणी माँ, उतना सुखी रहूँ ।
पाप बीज सुख कभी न चाहूँ, चाहे दुखी रहूँ ॥
श्रुतानन्द का भोगी योगी, जम्बू मुनिवर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 99॥

गुरुवर से मिलन

दशम पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

अचल मेरु भी विचलित होवे, धरा उलट जावे ।
किन्तु इन्द्र भी मुनि के मन को, नहीं पलट पावे॥
साम्य भाव का ऐसा वैभव, जीवन में भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 100॥

जो चाहो तुम पा सकते हो, कामधेनु तप है ।
तप ही चिन्तामणि रत्न है, अलंकार तप है ॥
मैं अज्ञान अँधेरे में हूँ, तपो दीप धर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 101॥

किस विधि भव को पार करूँ मैं, गुरु को तृप्ति मिले।
संघ परिश्रम सफल करूँ मैं, सब का चित्त खिले ॥
दिग-दिगन्त में, श्रमण संघ की, कीर्ति मनोहर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि,तेरे दर पर हो ॥ 102॥

कर्मोदय की गति विचित्र है, कब क्या हो जाये ।
कैसा कर्म उदय में आकर, कब क्या कर जाये ॥
कर्म विपाकी चिंतन करके, यह मन सुस्थिर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि,तेरे दर पर हो ॥ 103॥

मेरे कारण जिनशासन की, लाज नहीं जाये ।
मेरे कारण श्रमण संघ पर, आँच नहीं आये ॥
परिणामों की रक्षा करना, वीर जिनेश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 104॥

अब भी कोई हो उपाय तो, प्रभुवर बतलाओ।
जिनशासन की प्राण प्रतिष्ठा, आप बचा जाओ ॥
कैसा भी दुर्बन्ध किया हो, शीघ्र विनश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥105॥

पीड़ा भी परमात्म बनाती, सम्यग्दृष्टि को ।
निन्दा भी अध्यात्म सिखाती, सम्यग्दृष्टि को ॥
निन्दा और प्रशंसाओं में, समरसता भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि,तेरे दर पर हो ॥ 106॥

शीश नवाकर गुरुआज्ञा को, मैं स्वीकार करूँ ।
जो-जो गुरुवर कहा आपने, वैसा नित्य करूँ ॥
स्वतः समाधि लाभ मिलेगा, शिष्य विनयधर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि,तेरे दर पर हो ॥ 107॥

अज्ञानी की बात-बात में, हैं विकल्प कितने?
अरे प्याज के छिलके भीतर, छिलके हैं जितने ॥
पर भावों में, नहीं उलझना, सब छू मन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 108॥

ज्ञानी की हर बात-बात मैं, तत्त्व भेद कितने ?
ज्यों केले के पात-पात में, केल पत्र उतने ॥
ज्ञानीजन की संगति पाकर, धर्म ध्यानधर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥109॥

देव शास्त्र गुरु मुझे मिले हैं, तेरी शरणा में ।
गुरु विराग भी मुझे मिले हैं, तेरी करुणा में ॥
मिले साधना और समाधि, यही विभव वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 110॥

माँ की गोदी के अशोक की गोद भरते हुए माँ

एकादश पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

उपसर्गों के हो जाने पर, या दुर्भिक्षा हो।
अनिवारी बीमारी हो, या घोर बुढ़ापा हो॥
तभी धर्म के लिए त्याग तन, व्रत सल्लेखन हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 111॥

अन्तक्रिया अध्यात्मक्रिया यह, सल्लेखन जानूँ।
श्री सर्वज्ञ जिनेश्वर कहते, तप का फल मानूँ॥
यथा शक्ति हो पूर्ण भक्ति हो, क्रम सल्लेखन हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 112॥

नहीं किसी से राग हमारा, नहीं द्वेष मेरा।
नहीं किसी से बैर हमारा, निर्मल मन मेरा॥
क्षमा करूँ मैं, क्षमा कराऊँ, क्षमा भाव भरदो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 113॥

निश्छल मन आलोचन कर लूँ, गुरुवर के आगे।
जन्म-जन्म के पाप बंध भी, पल भर में भागे॥
स्वीकारूँ आमरण महाव्रत, दीक्षा मुनिवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 114॥

गेह-नेह तज खेद शोक तज, तजूँ कलुषता को।
रागद्वेष तज महाधैर्य धर, भाव कुशलता हो॥
सदा श्रुतामृत पिऊँ पिलाऊँ, चित् उज्ज्वल कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 115॥

जीने की इच्छा ना होवे, नाहीं मरने की।
मित्रजनों की याद न आवे, बात न डरने की॥
निरतिचार सल्लेखन धारूँ, यह सुबुद्धि वर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 116॥

धर्मामृत को पीने वाला, कोई क्षपक अहो।
सर्वदुखों से रहे अछूता, सुखमय सदा कहो॥
सुख अंनत को प्रतिपल भोगे, सिद्ध जिनेश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 117॥

जन्म जरामय मरण शोक भय, दु:ख चिंता नाहीं।
सर्व विकार विवर्जित आतम, शुद्ध सुखी ताहीं॥
अविनाशी नि:श्रेयस् शिव सुख, प्राप्त निरंतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 118॥

विद्या दर्शन शक्ति अनंता, परम स्वास्थ्यकारी।
अव्याबाधी सौख्य अनंता, शुद्धि तृप्तिधारी॥
सल्लेखन का यही महाफल, क्षपक चिदम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 119॥

निज स्वभाव ऐसा प्रकटाया, कभी न बदलेगा।
शाश्वत सुख की लहरें उठती, सुख ही छलकेगा॥
यह समाधि का श्रेष्ठ महाफल, सबसे सुन्दर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 120॥

जैनधर्म वह कल्पवृक्ष जो, तीनों काल फले।
तप के पत्ते लगे हैं जिसमें, सद्गुण फूल खिले॥
मोक्ष महाफल देने वाला, छाँव निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 121॥

सूरि के साथ सूरि शोभा पाते हुए

द्वादश पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

जहाँ-जहाँ भी जैनधर्म हो, फूले और फले।
फला-फूलता देखूँ सबको, मेरा चित्त खिले॥
वात्सल्य की यही भावना, सबके अन्दर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 122॥

भव समुद्र से कौन तरेगा, किसको तारेगा?
शुभ उपयोगी सन्त तरेगा, शुभ को तारेगा॥
शुभ उपयोगी बनूँ-बनाऊँ, भाव शुद्धतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 123॥

जिस-जिसने परमागम देखा, उसने सब देखा।
खुली हुई जिनवाणी उसकी, खुली भाग्य रेखा॥
अतः देख लूँ परमागम को, मन श्रुत मन्दिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 124 ॥

आगम पढ़ जो आतम जाने, वही श्रमण होते।
आगम का अभ्यास करें नित, सकल कर्म खोते॥
आगम चक्षु साधु कहाते, ज्ञान समुन्दर ओ!
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 125 ॥

विषय कषायों में जो डूबा, वह क्या पायेगा?
भवसागर में डूब रहा है, और डुबायेगा॥
नहीं तरेगा ना तारेगा, चंचल बन्दर वो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 126॥

द्रव्य न बदला, गुण ना बदले, पर्यायें बदलीं।
एक आत्मा चतुर्गति में, नाना रूप ढली॥
द्रव्य द्रव्यता नहिं तज सकता, यह निश्चय कहलो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 127॥

कभी नारकी कभी देव पद, नर पशु पर्यायें।
जीव स्वयं धारण करता है, कर्मोदय आयें॥
आत्म द्रव्य तो जो है सो है, पर्यायें पर खो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 128॥

मेरा आतम पर का आतम, हैं न्यारे-न्यारे।
दोनों के भीतर परमातम, भी न्यारे-न्यारे॥
सबकी सत्ता अलग-अलग है, भेदज्ञान करलो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 129॥

आँख बंद होने से पहले, आगम नयन खुले।
आगम की राहों में चलकर, जिनपथ हमें मिले॥
हे परमागम! नयन हमारे, उन्मीलन कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 130॥

ज्यों नदियों के मिल जाने को, सागर कहते हैं।
त्यों सुनयों के मिल जाने को, प्रमाण कहते हैं॥
नय-प्रमाण की यही व्यवस्था, आगम पढ़कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 131॥

गुणी जनों के गुण को लखकर, मन आकर्षित हो।
उत्तम नर उत्तम पात्रों को, देखे हर्षित हो॥
पूज्य पुरुष की विनय करूँ नित, बनूँ विनयधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 132॥

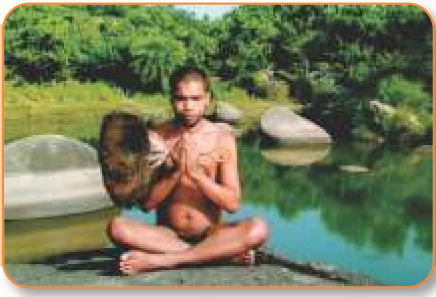

वंदना मुद्रा में वंदनीय

त्रयोदश पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

वह बोलूँ जो प्रभु ने बोला, दिव्य देशना में।
वही सुनूँ जो सदा सुनाया, गौतम गणधर ने॥
वही करूँ कृत्कृत्य बनाये, निजकर पर कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 133॥

जिसने जैसा लक्ष्य बनाया, वैसा फल पाया।
कल्पवृक्ष तो फल दाता है, क्यों ना दे छाया॥
शान्ति सिन्धु सा मरण समाधि, कुन्थलगिरि पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 134॥

मेरे पुण्योदय से गुरुवर! आप यहाँ आये।
पुण्य क्षेत्र में पुण्य पुरुष के, शुभ दर्शन पाये॥
अन्य क्षेत्र में किया पाप सब, यहाँ विनश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 135॥

जहाँ पंचकल्याणक होवे, वहाँ चला आऊँ।
तीर्थंकर के जन्मोत्सव पर, न्हवन करा आऊँ॥
दीक्षा लख दीक्षा को धारूँ, यम संयमधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 136॥

जिन भावों को मैं करता हूँ, मैं उनका कर्ता।
पर भावों को मैं ना करता, ना परका कर्ता॥
ज्ञानी! ज्ञानभाव का करना, भव-भव हितकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 137॥

दुख के आगे सुख है प्यारे, ये निश्चय जानूँ।
रैन-बसेरा होय सबेरा, अटल नियम मानूँ॥
कमठ पलायन कर जायेगा, स्वयं क्षमाधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 138॥

ज्ञानी अपने ज्ञानभाव से, ज्ञान भाव रचता।
अज्ञानी अज्ञान भाव से, अज्ञ भाव रचता॥
भाव रचयिता है तू ज्ञानी! रचना सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 139॥

सुख होता है ज्ञान बराबर, सुन ले ज्ञानी रे।
दुख होता है अज्ञान बराबर, सुन ले प्राणी रे॥
आलस तजकर ज्ञान भावना, नियत निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 140॥

कर्मोपाधि निरपेक्षित नय, सम्यक् स्वीकारूँ।
सिद्धों जैसा मैं शुद्धातम, ये निश्चय धारूँ॥
ज्ञान कला का ध्यान कला में, शुभ रूपान्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 141॥

अरे! शुद्ध द्रव्यार्थिक नय से, निज निर्णय कर लूँ।
पर्यायों के पार खड़ा निज, द्रव्य नित्य कहलूँ॥
हर्ष-विषाद नहीं मन लाऊँ, सदानंद भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 142॥

भेद कल्पना निरपेक्षितनय, शुद्ध द्रव्य जानूँ।
निज गुण निज पर्याय भाव से, निज अभिन्न मानूँ॥
अभेद ग्राही शुद्ध द्रव्य की, श्रद्धा दृढ़कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 143॥

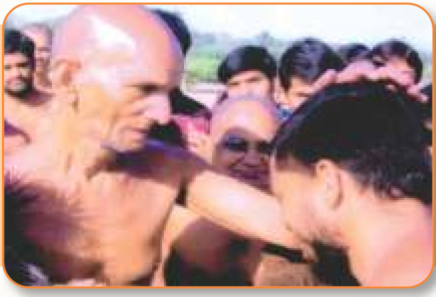

दादा गुरुवर के आशीष छाया पाते गुरुवर जी

चतुर्दश पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

कर्मोपाधि सापेक्षित नय, द्रव अशुद्ध जानूँ।
रागद्वेष कर्मज भावों को, अपना भी मानूँ॥
निन्दा पूर्वक आलोचन सुन, प्रायश्चित वर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 144॥

जो अपना है वह अपने से, कभी न छूटेगा।
ना टूटेगा, ना फूटेगा, ना ही रूठेगा॥
भो! एकत्व विभक्त्व आत्मा, जग में सुन्दर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 145॥

यह दुर्लभ क्षण दुश्चिंतन में, नहीं बिताना है।
वर्तमान में वर्द्धमान सा, भाव जगाना है॥
दुश्चर्या दुष्पथ को तजकर, आत्म ध्यान धर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 146॥

सम्यग्दृष्टि समय बिताये, ज्ञान भावना में।
मिथ्यादृष्टि समय बिताये, कलह कामना में॥
चर्या ही पहिचान बताये, सम्यक्त्वी नर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 147॥

जिनवर बोलें गणधर झेलें, सभी धन्य होलें।
पूर्वाचार्यों के अनुक्रम से, रचित शास्त्र खोलें॥
स्याद्वाद् शास्त्रों का अमृत, यहाँ पान कर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 148॥

तुमको पाकर मुनिवर मेरा, मन हरषाता है।
दान हमारा कल्पवृक्ष सा, शोभा पाता है॥
आदिनाथ भगवान् पधारे, ज्यों श्रेयस् घर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 149॥

बिना खिलाये कैसे खाऊँ, खाया ना जाये।
दाता श्रावक करे प्रतीक्षा, कब सुपात्र आये॥
पात्रदान कर हर्ष मनाऊँ, ज्यों नवनिधि कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 150॥

शुद्धातम में रमने वाले, अरे कहाँ दुख है।
तेरा तो उपयोग वहाँ है, जहाँ शुद्ध सुख है॥
परम निराकुल तू परमातम, सिद्ध सुखेश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 151॥

देवशास्त्र गुरु भक्त आप हो, पूर्ण विरक्त अहो।
रत्नत्रय संयुक्त आप हो, गुण अनुरक्त अहो ॥
समता लाओ, समाधि पाओ, जय मुक्तीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 152॥

लौकिक जन की संगति का फल, चंचल चित् होना।
महामुखरता, योग कुटिलता, निजस्वभाव खोना॥
जन सम्पर्क तजूँ मन तन से, सदा मौनधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 153॥

मिथ्यादृष्टि बहुत सुलभ हैं, इस पंचम युग में।
सम्यग्दृष्टि श्रावक मुनिवर, दुर्लभ इस युग में॥
दुर्लभ सम्यग्दर्शन पाकर, सम्यक्त्वी नर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 154॥

अग्रज के साथ अग्रविचारशील गुरुवर

पञ्चदश पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

नहीं छिपाया कुछ भी तुमने, अपना धन हमसे।
बिन माँगे ही दिया बहुत कुछ, क्या मागूँ तुमसे॥
क्षायिक दान दिवैया हो तुम, और नहीं कुछ दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 155॥

मैंने चरण छुए दो तेरे, तुमने हृदय छुआ।
मेरे आत्म प्रदेशों पर तव, अद्भुत असर हुआ॥
तेरे गुण मुझमें प्रकटे ज्यों, सर इन्दीवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 156॥

अक्षय श्रद्धा अक्षय विद्या, अक्षय संयम दो।
दो अक्षय वैराग्य जिनेश्वर, अक्षय शम-दम हो।
हृदय कमल पद सदा विराजें, गुरु पद पुष्कर दो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 157॥

चरण न भूलूँ, करण न भूलूँ, शरण नहीं भूलूँ।
तारण तरण जिनेश्वर तुमसा, मरण नहीं भूलूँ॥
भद्रबाहु सा मरण इंगिनी, चन्द्रगिरि पर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 158॥

धर्मवीर निकलंक देव सा, भाई सदा बनूँ।
न्यायपिता अकलंक देव सा, न्यायी सदा बनूँ॥
जिनशासन के लिए हमारा, तन न्यौछावर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 159॥

जिसमें हित हो वही सत्य है, वह हो या ना हो।
जहाँ अहित हो वह असत्य है, वह हो या ना हो॥
हिताभिलाषी वचन हमारा, सत्यम् सुन्दर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 160॥

नन्द-नन्द आनन्द प्रदायी, नान्दगिरी-न्यारी।
गुफा के अन्दर जल मन्दिर में, जिन प्रतिमा प्यारी॥
यहाँ विराजे पारस जिनवर, सदा विघ्नहर हो!
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 161॥

दर्शन पाकर ऐसा लगता, पूछो तो कैसा?।
तीर्थराज सम्मेद शिखर के, स्वर्णभद्र जैसा॥
नन्दीश्वर सा नान्दगिरी ज्यों, कल्याणक पुर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 162॥

ना जाने किस भव में मैंने, कैसा पुण्य किया।
उसी पुण्य के फल से भगवन्! दर्शन यहाँ हुआ॥
इस दर्शन का फल भी जिनवर, शाश्वत् सुंदर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 163॥

पहले सपनों में देखा था, अब सच में देखा।
सपने भी सच होते भगवन्! अनुभव कर लेखा॥
ज्यों माता के सपने आये, प्रभु! तीर्थंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 164॥

जो है, उसे बचाओ मित्रो, यह उपकार करो।
ना हो उसे बनाओ मित्रो, कुछ सहकार करो॥
जागो जैनो, जागो जैनो, सदा एक स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 165॥

प्रसन्नता में
प्रसन्न गुरुवर

षोडष पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

पुनः बुलाना भूल न जाना, सपनों में आना।
कैसे भी हो हमको अपने, दर पर ले आना॥
तेरे दर पर ऐसा लगता, ज्यों अपना घर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 166॥

जैसे विष को हर लेती है, यथा गरुड़ मुद्रा।
पाप रूप विष त्यो हर लेती, यह जिनवर मुद्रा॥
अंत समय तक मेरे सम्मुख, प्रतिमा जिनवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 167॥

यथा बीज में वृक्ष समाया, तिल मे तेल अरे।
और दूध में घृत रस जैसे, ईन्धन आग धरे॥
पाहन में प्रतिमा के जैसी, अभिव्यक्ति करदो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 168॥

नहीं चाहिए मुक्तामणियाँ, जड़ वैभव निधियाँ।
मेरे गुरुवर! मुझे सिखादो, पड़गाहन विधियाँ॥
आदीश्वर से मुनिवर आये, घर हस्तिनपुर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 169॥

कहीं न जाऊँ कुछ ना पाऊँ, निज निधि प्रकटाऊँ।
अन्तर आतम में रम-रम कर, अनुभव रस पाऊँ॥
रत्नत्रय प्रकटाने वाले, गुरु-रत्नाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 170॥

भोग रहित हूँ, रोग रहित हूँ, शोक रहित स्वामी।
योग और संयोग रहित उपयोग सहित स्वामी॥
मैं चिद्रूपी अरस अरूपी, शुद्ध चिदम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 171॥

जैसे जल से मोती प्रकटे, पाहन से सोना।
वैसे ही निज उपादान से, परमातम होना॥
बाह्याभ्यन्तर दोनों साधन, मुझको रुचिकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 172॥

जैसे जल में जल मिल जाता, कुल में कुल मिलता।
वैसे ही निश्छल भावों से, सन्त-सन्त मिलता॥
वात्सल्य की गंगा-यमुना, बहे शुभंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 173॥

संत मिले तो मिली प्रेरणा, हिल-मिल रहने को।
संत मिले तो मिली प्रेरणा, परिषह सहने को॥
ऐसे सन्त मिलन का अवसर, आये फिर-फिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 174॥

मेरा मन विचलित ना होवे, ओ मेरे स्वामी।
वाणी भी स्खलित ना होवे, ओ मेरे स्वामी॥
रहे निरोगी काया आतम, धर्मध्यानतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 175॥

इतने काल यहाँ पर ठहरे, अब हम जाते हैं।
तुम सबका कल्याण शीघ्र हो, वचन सुनाते हैं॥
नीति वाक्य यह मुनिराजों को, सदा शुभंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 176॥

ध्यान मुद्रा में ध्यानी

सत्रहवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

जो ना सोचा वह मिल जाये, इसे भाग्य कहते।
वीतराग दर्शन मिल जाये, अहो भाग्य कहते॥
जागें नित सौभाग्य हमारे, प्रभु! जिन दर्शन दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 177॥

हो सकता कुछ योग रहा हो, या संयोग रहा।
जिन मंदिर में मेरे मन का, शुभ उपयोग रहा॥
उसी प्रार्थना के बल से तुम, सम्मुख जिनवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 178॥

पिछले किसी जन्म में मैंने, सेवा की होगी।
जिनदर्शन कर भक्ति भाव से, पूजा की होगी॥
ईश मिलन का अवसर आया, आज यहाँ फिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 179॥

एक गुफा में इतने दर्शन, और कहाँ पाऊँ।
महाराष्ट्र के चाँदवाड़ में, फिर-फिर कब आऊँ॥
दर्शन दे आनंद बढ़ा दो, पुण्य प्रबल कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 180॥

पुनः घड़ी यह कब आयेगी, बतला दो इतना?
उतना पुण्य जगाऊँ कैसे, दर्शन को जितना?
भाव वंदना निशदिन करना, आप जहाँ पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 181॥

किस विधि जाऊँ, कैसे जाऊँ? प्रभु तेरे दर से।
आप बताओ मिले हो कैसे? हम कितने तरसे॥
मेरे भगवन्! तेरा दर्शन, समय-समय पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 182॥

चाँदवाड़ की चन्द्रगुफा में, जिनवर प्यारे हैं।
पूर्ण दिगम्बर वीतराग ये, नाथ हमारे हैं॥
परमातम परमातम दिखता, प्रस्तर-प्रस्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 183॥

धन्य-धन्य शिल्पी का पौरुष, शिल्प कला न्यारी।
जिनशासन का अद्‌भुत वैभव, जिनप्रतिमा प्यारी॥
कार्य असंभव हुआ है संभव, कितना दुस्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 184॥

पर्वत काट-काट शिल्पी ने, प्रभु उकारे हैं।
ऋषभगिरी पर ऋषभदेव जी! कितने प्यारे हैं॥
सबसे ऊँचे ऋषभदेव तुम, तुंगीगिरि पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 185॥

गजकुमार मुनि मोक्ष पधारे, गजपंथा जी से।
आठ कोड़ि मुनि मोक्ष पधारे, गजपंथा जी से॥
और सात बलभद्रों का भी, यही मुक्तिदर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 186॥

यहाँ मिली जो पवित्र ऊर्जा, आगे बनी रहे।
यहाँ जगी जो भाव शुद्धता, आगे बनी रहे॥
सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी जी! दर्शन फिर-फिर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 187॥

क्षमासागर के साथ
क्षमासागर गुरु

अठारहवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

सन्त हवा से हल्के होते, आये चले गये।
ना कुछ लाये ना ले जाये, जीना सिखा गये॥
तुमको कभी नहीं छू पाया, मद-आडम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 188॥

गुप्ति चाक है ज्ञान धुरा है, दीक्षा की गाड़ी।
समिति रूपी बैलों की जोड़ी, शिवपथ में दौड़ी॥
वीर जिनेश्वर बनो सारथी, ले चल शिवपुर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 189॥

मरा वैद्य ज्यों मरते नर को, नहीं बचा सकता।
दुर्गति में दुःख भोगे प्राणी, कौन बाँट सकता॥
वस्तु स्वरूप विचार करे तो, निज स्वभाव थिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 190॥

आगम के अनुसार चले यति, पर मन अस्थिर हो।
तो कैसे चलनी सम मन में, समता जल थिर हो॥
श्रद्धा श्रुत स्वाध्याय क्रिया से, संकल्पित उर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 191॥

पावन दर्शन, पावन प्रवचन, तीरथ वंदन हो।
तीर्थभूमि की पावन रज ही, माथे चंदन हो॥
निर्ग्रन्थों के पद चिन्हों पर, गमन निरन्तर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 192॥

कर्मधूल को उड़ा रहे हैं, महातपस्वी जो।
धर्मफूल को खिला रहे हैं, महामनस्वी जो॥
उनका चिंतन उनका सुमरण, मन प्रस्तर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 193॥

मन अंधा है मन गूँगा है, ये मन बहरा है।
मन चंचल है, मन चिकना है, मन पर कुहरा है॥
मेरे मन में महामंत्र का, पल-पल सुमरण हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 194॥

रागद्वेष आडम्बर तजके, तीर्थ शिखर आये।
शुद्ध भावनाओं से भरकर, प्रभु तुमको ध्याये॥
द्रव्य दृष्टि से तुम जैसा हूँ, तुम निज सम करलो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 195॥

अनुशासन हो श्वास हमारी, आज्ञा प्राण रहे।
सेवा हो सत्कर्म हमारा, प्रज्ञा दान रहे॥
मेरे जीवन की यह डोरी, गुरुवर के कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 196॥

क्या अभाव है क्या विभाव है, क्या स्वभाव जानूँ।
श्रुत प्रभाव से अशुभ भाव तज, शुद्ध भाव जानूँ॥
शुद्ध भाव को मैं श्रद्धानूँ, शुद्ध चिदम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 197॥

जीवन का अंतिम उत्सव यह, मृत्यु महोत्सव हो।
सहज भाव हो साम्य भाव हो, समता उत्सव हो॥
मृत्युराज इस कल्पवृक्ष का, फल निज कर में हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 198॥

गोमटेश के चरणों में श्रमणराज

उन्नीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

गजकुमार सुकुमाल यशोधर, मुनि आदर्श रहें।
लाखों बाधायें भी आयें, हँस कर उन्हें सहें॥
हे उपसर्ग विजेता गुरुवर, परिषह जय कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 199॥

कितना खोजूँ कैसे खोजूँ, कहाँ-कहाँ खोजूँ।
आप बताओ सही ठिकाना, वहाँ-वहाँ खोजूँ॥
अपने अंदर सदा विराजा, अपना ईश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 200॥

यही ज्ञान हो यही ध्यान हो, ये ही भान रहे।
श्वास-श्वास में निज आतम का, अनुसंधान रहे॥
महामंत्र की गाथा गूँजे, समयसार स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 201॥

चित्त शुद्धि ही श्रेष्ठ शुद्धि है, सभी शुद्धियों में।
धर्म बुद्धि ही श्रेष्ठ बुद्धि है, सभी बुद्धियों में॥
चित्त शुद्धि हो, धर्म बुद्धि हो, दूर मोह ज्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 202॥

ज्यों प्यासे को जल मिल जाये, पंथी को छाया।
भूखे को भोजन मिल जाये, निर्धन को माया॥
जैन धर्म त्यों मुझे मिला है, दुखहर सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 203॥

मोक्षमार्ग तुमने दरशाया, तुम हितकारी हो।
संयम पथ में साथ निभाया, तुम उपकारी हो॥
नहीं स्वर्णपुर नहीं अमरपुर, ना अन्तःपुर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 204॥

जितनी-जितनी ममता जागे, उतना कर्म बँधे।
जितनी-जितनी समता जागे, उतना कर्म कटे॥
ममता तज दूँ समता भज लूँ, संवर-निर्जर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 205॥

पाँच महाव्रत पाँच समितियाँ, तीन गुप्ति पालूँ।
तेरह विध चारित्र पालकर, सभी दोष टालूँ॥
आवश्यक कर्तव्य पालना, आतम अन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 206॥

मैं जिन! भक्त तुम्हारा तुमको, सादर नमन करूँ।
दिव्य देशना सुनता जाऊँ, शिवपथ गमन करूँ॥
जिन आज्ञा सम्यक्त्व कवच ही, मम सरंक्षक हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 207॥

जहाँ प्रभुवर! आप गये हो, हमें वहाँ चलना।
कब से कितना दूर रहा हूँ, अब होवे मिलना॥
सर्व संघ में क्षेम कुशल हो, गुरु आज्ञा स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 208॥

माता से जो नहीं सुना है, और पिता से ना।
भाई से जो नहीं सुना है, और मित्र से ना॥
उस अपूर्व जिन वचनामृत का, दान दया कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 209॥

निहारते निहाल को

बीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

अरिहंतो का धर्म मिला है, श्री जिन की वाणी।
निर्ग्रन्थों से मिली है शिक्षा, दीक्षा कल्याणी॥
मेरा महाभाग्य ही जागा, हुआ दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 210॥

धर्म रसायन पी-पीकर के, अब मैं स्वस्थ हुआ।
सर्व परिग्रह भार त्याग के, मैं ध्यानस्थ हुआ॥
महावीर भगवान आप सा, पावापुर सर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 211॥

ज्यों पोली लकड़ी के भीतर, कोई कीट रहे।
उस लकड़ी के ओर-छोर में, इकदम आग लगे॥
उसी कीट सा दुखी जीव हूँ, सद्गुरु जलधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 212॥

ज्यों चलती हुई नौका ऊपर, कोई नर बैठा।
अपने को थिर मान रहा है, अरु मद में ऐंठा॥
भ्रान्तिमान उस नर के जैसा, मद विकार ना हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 213॥

मरण नहीं हो जहाँ हमारा, हमें वहाँ जाना।
जन्म मरण की परम्परा को, नहीं पुनः पाना॥
काल अनन्ता रहूँ वहाँ पर, कोई फिकर न हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि तेरे दर पर हो॥ 214॥

चिर परिचित मिथ्यात्व हमारा, कैसे छूटेगा।
भव दुःख वर्द्धक मोह हमारा, कैसे टूटेगा॥
सम्यग्दर्शन आराधन दे, मोह तिमिर हर दो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 215॥

आग का उतना दोष नहीं है, विष का दोष नहीं।
नदी, कूप, सिंह, दुर्जन, पामर इनका दोष नहीं।
महादोष मिथ्यात्व का जानो, अतः मोह हर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 216॥

यथा सर्प को कितना रोको, निज विल में जाता।
वैसे ही यह चित्त हमारा, पर-पर में जाता॥
स्याद्वाद की बीन बजाकर, मन वश में कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 217॥

गुन-गुन गुन-गुन गुन-गुन गाऊँ, ओ मेरे प्रभु जी।
नम-नम नम-नम नम-नम जाऊँ, ओ मेरे प्रभु जी॥
तेरी महिमा कैसे गाऊँ, रहा निरक्षर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 218॥

तुमसी अद्भुत वीतरागता, निज मैं प्रकटाऊँ।
तुमसी निष्पृह निर्भय निर्मल, शुद्ध दशा पाऊँ॥
करूँ निरालस आत्म साधना, कोई कसर न हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 219॥

राग द्वेष दो पंखों द्वारा, मन पंछी उड़ता।
विषय वृक्ष के फल खाने को, नित आगे बढ़ता॥
इसीलिए इस राग-द्वेष को, पूर्ण शांत कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 220॥

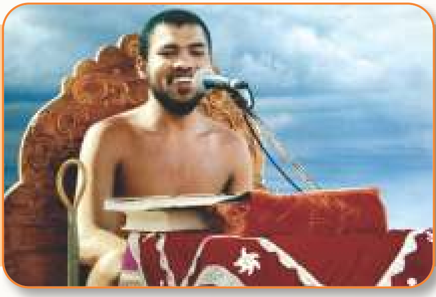

आचरणकर्ता
आचरण का
उपदेश देते हुए

इक्कीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

ज्ञान दिवाकर की किरणों से, राग नदी सूखे।
निज वैभव की माणिक मणियाँ, अंतर में दीखें॥
निज चैतन्य प्रदेशों पर ही, उदय दिवाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 221॥

सकल कर्म क्षय करने वाली, किरिया हो मेरी।
पूर्वाचार्यों के अनुक्रम से, चर्या हो मेरी॥
सोच-समझ में प्रतिपल मेरी, जिन आगम स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 222॥

मेरा स्वर ईश्वर तक पहुँचे, यही प्रार्थना है।
मेरे स्वर में बसा हो ईश्वर, यही भावना है॥
मेरे ईश्वर तुम्हे समर्पित, मेरा हर स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 223॥

जो समाधि के काम न आये, उसे नहीं चाहूँ।
जो परभव में साथ न जाये, उसे नहीं चाहूँ॥
जो संयम को सदा बढ़ाये, वही लाभ कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 224॥

मधुर वचन हितकारी परमित, जैसा सुख देते।
वैसा सुख जल चंदन चंदा, मोती ना देते॥
अतः मित्र तुम ऐसा बोलो, सदा हितंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 225॥

पानी नहीं डुबाता उसको, आग जलाती ना।
सद्वादी को प्यारे भैया!, नदी बहाती ना॥
माता सम विश्वास योग्य वह, गुरु सा हितकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 226॥

इष्ट अबाधित औ असिद्ध है, अहो साध्य मेरा।
जिस साधन से तुमने साधा, वह साधन मेरा॥
शुभ समाधि का अविनाभावी, रत्नत्रय थिर हो।
मेरा अन्तिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 227॥

दीक्षा देना, शिक्षा देना, सम्बोधन देना।
स्वानुभूति की कला सिखाना, उद्बोधन देना॥
विराग दाता विराग सागर, मेरे गुरुवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 228॥

राग न उपजे, द्वेष न उपजे, मोह नहीं उपजे।
क्रोध न उपजे, मान न उपजे, लोभ नहीं उपजे॥
दुर्ध्यानों से मुझे बचाना, मेरे ईश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 229॥

कर्म रुलाते कर्म हँसाते, कर्म भ्रमाते हैं।
उनको जो नर कर्मोंदयवश, परिणम जाते हैं॥
किन्तु ज्ञानमय जो परिणमते, कर्मजयी नर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 230॥

शुभ भावों से शुभ कर्मों को, आप बढ़ाते हैं।
शुभ भावों से अशुभ कर्म को, आप घटाते हैं॥
शुद्ध भाव से उभय कर्म को, पूर्णरूप हर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 231॥

माला के साथ
मन मंथन
करते हुए

बाबीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

कर्म स्वयं अपना फल देते, कोई ईश नहीं।
अरे कर्म को नहीं चाहिए, न्यायाधीश कहीं॥
भला चाहने वाले प्राणी, भाव भले कर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 232॥

मौनयोग सर्वार्थ योग है, अर्थ सिद्धिकारी।
मौनमन्त्र ही महामन्त्र है, सर्व कार्यकारी॥
सब प्रश्नों का परमोत्तर यह, मौन अनुत्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 233॥

परम ज्योति कैवल्य ज्योति जो, विश्व प्रकाशी है।
जिस ज्योति में झलक रहा सब, श्रुत विश्वासी है॥
शिव मुहूर्त मेरा बतला दो, ज्योतिष जिनवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 234॥

जब जागे पुरुषार्थ तुम्हारा, तभी मुहूरत है।
जब जागे वैराग्य तुम्हारा, वही मुहूरत है॥
परम ज्योतिषी जिनवर कहते, अब तू मुनिवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 235॥

कलम कलश लो, पत्र पात्र लो, अक्षर प्रतिमा हो।
श्रुत चिंतन की जलधारा हो, मन जिन महिमा हो॥
यह अक्षर अभिषेक करूँ नित, निज पद अक्षर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 236॥

ज्ञान उत्पन्न नहीं होता है, है स्वभाव तेरा।
ज्ञान प्रवृत्त मात्र होता है, आतम गुण डेरा॥
जैसे जल उत्पन्न न होता, मात्र उजागर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 237॥

धरती नीचे अगाध पानी, खोदो तो पाओ।
अपने भीतर अनंत गुण हैं, खोजो प्रकटाओ॥
अपने ज्ञान ध्यान तप बल से, प्रकटे ईश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 238॥

सामायिक ही शुभ मुहूर्त है, सामायिक कर लो।
समता जगना कार्य सिद्धि है, समता उर धर लो॥
गुरु उच्च हो हृदय विराजे, लग्न चराचर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 239॥

गुरु भक्तों की यह गुरुभूमि, शुभ नर वाली है।
यहाँ दशहरा रक्षाबन्धन, रोज दिवाली है॥
गुरु आये सन्मति युग आया, खुशियाँ घर-घर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 240॥

कोई पूछे कौन-पधारे, तो हम बोलेंगे।
भक्तों के भगवान पधारे, जय-जय बोलेंगे॥
अहो दिगम्बर! अहो दिगम्बर! सन्त दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 241॥

नश्वर ये तन, नश्वर यौवन, नश्वर जीवन है।
अग्नि बोली तेरा ये धन, मेरा ईंधन है॥
ये सब पर तो नाशवान हैं, आप अनश्वर हो॥
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 242॥

प्रसन्न मुद्रा में

तेईसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

नमोस्तु गुरुवर! नमोस्तु गुरुवर! नमोस्तु गुरुवर जी!।
नमोस्तु गुरुवर! नमोस्तु गुरुवर! नमोस्तु गुरुवर जी!॥
सन्मति दाता! सन्मति दे दो! सन्मति सागर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 243॥

वर्द्धमान सागर जी आओ, अभिनंदन आओ।
विद्यासागर विरागसागर, सबके मन भाओ॥
आओ-आओ मेरे गुरुवर, गूँजें यह स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 244॥

निज आतम की अनंत क्षमता, ममता ने रोकी।
निज स्वभाव की अनंत महिमा, समता ने रोपी॥
स्वभाव प्रकटे, विभाव विघटे, दूर सभी पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 245॥

वहाँ मोक्ष का द्वार खुला है, तीर्थंकर द्वारा।
यहाँ मोक्ष का मार्ग खुला है, श्री मुनिवर द्वारा॥
मोक्षमार्ग पर चलने वाले, मिले मुक्ति दर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 246॥

मरना चाहो या ना चाहो, मरना ही होगा।
अगर समाधिमरण करोगे, भव तरना होगा॥
अत: समाधि मरण साध लूँ, आतम हितकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 247॥

स्वस्थ काय हो, स्वस्थ वचन हो, स्वस्थ मनन मेरा।
स्वस्थ स्वस्थ हो चेतन-चिंतन, स्वस्थ गमन मेरा॥
स्वस्थ लक्ष्य हो, स्वस्थ साध्य हो, परम स्वस्थ कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 248॥

जो कष्टों में नहीं भूलता, अपना इष्ट अरे।
उस पावन प्राणी का जग में, कौन अनिष्ट करे॥
कष्टों से तू मत घबराना, कष्ट विनश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 249॥

अगले भव नंदीश्वर जाने, ना रोका जाऊँ।
अत: अभी मुनिवर होता हूँ, स्वत: शक्ति पाऊँ॥
निश्छल भावों दर्शन करता, मैं झुक-झुककर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 250॥

भला हि सोचूँ, भला हि चाहूँ, सदा भला देखूँ।
भला सुनूँ मैं, भला कहूँ मैं, और भला लेखूँ॥
सदा भला, सर्वत्र भला हो, सर्व भला कर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 251॥

प्यारा मंदिर, प्यारी प्रतिमा, अतिशय बहुत बड़े।
दर्शन पाने लालायित हो, ये मुनि संघ खड़े॥
भक्त जनों के नारे गूँजे, जय अन्देश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 252॥

जो कुछ पाने घर से निकला, वो सब मिला यहाँ।
आत्म शान्ति की भरी सुगन्धि,शतदल खिला यहाँ॥
मेरे अन्दर ईश विराजो, जय अन्देश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 253॥

दर्शन मुद्रा में

चौबीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

तेरे द्वारे, दर्शन करने, जो भी आते हैं।
कोई संयम, कोई श्रद्धा, सुख पा जाते हैं॥
आत्म शान्ति का लाभ मिला जो, वह अविनश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 254॥

संयम रूपी आभूषण से, आभूषित मुनि को।
मुक्ति अंगना सदा निहारे, प्रतिपल-प्रतिदिन हो॥
संयम ही जीवन है प्यारे, धारो सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 255॥

अन्य धर्म जो कहे जगत में, वे सब माटी से।
जैन धर्म को ऐसा मानो, रत्न मणि जैसे॥
कर्म योग मानुष भव पाया, धर्म निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 256॥

धर्म दान करने में तत्पर, तप धन के धारी।
वानर को नवकार सुनाते, मुनिवर उपकारी॥
बंदर देव हुआ ज्यों सुनकर, वही मंत्र भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 257॥

पंच महाव्रत रूपी गज पर, जो सवार होके।
तीन गुप्ति का कवच पहनके, तपो शस्त्र लेके ॥
महा सुभट उन मुनिराजों से, मोह शत्रु हर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 258॥

राज लक्ष्मी देने वाला, सुख देने वाला।
सबका मंगल करने वाला, दुःख हरने वाला॥
जैन धर्म का सर्वोत्तम फल, मोक्ष शिखर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 259॥

श्रावक धर्म स्वर्ग सुख देता, पाले सो पावे।
मुनिवर धर्म मोक्ष सुख देता, पाले सो पावे॥
हम भी पालें तुम भी पालो, हृदय धर्म धर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 260॥

पहले धर्म बिना दुःख भोगे, दुर्गति में जाके।
अब जो धर्म नहीं कर पाया, नरगति में आके॥
तो क्या होगा लख चौरासी, खाये चक्कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 261॥

ना मैं पर का, पर ना मेरा, निर्णय मुझे हुआ।
ज्ञाता दृष्टा मम स्वरूप ही, निज में लीन हुआ॥
निर्विकार जिन कल्पी मुनि सा, परम दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 262॥

जो नरतन पा धर्म न करते, वे ऐसे जानो।
स्वयं हथेली के अमृत को, गिरा रहे मानो॥
अत: धर्म का अर्जन करना, कहते गणधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 263॥

सपने में भी जिन दर्शन हों, वह सपना आये।
मोह नींद से मुझे जगाने, गुरु अपना आये॥
गोवर्द्धन सा मुझे सम्हाले, शिवपथ सहचर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 264॥

वैराग्य तिलक करते जनक

पच्चीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

तीर्थंकर भाषित पुरुषों के, चारित चिन्तन में।
सदा विवेकी समय बितायें, आगम मन्थन में॥
संशयहारी जगहितकारी, जैन वचन स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 265॥

पाप बढ़ाने वाले ग्रंथों, की रचना ना हो।
धर्म बढ़ाने वाले ग्रंथों, की संरचना हो॥
निज माथे में सदा घूमते, तेरे अक्षर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 266॥

अरे मृगों से कभी न संभव, सिंह का बध होना।
कभी न संभव श्वानों द्वारा, गज बंधन होना॥
उसी तरह मिथ्या भाषण से, नहीं पुण्य फल हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 267॥

बालू पेले तेल न मिलता, पानी से घृत ना।
ज्यों अग्नि से ताप न मिटता, विष से अमृत ना॥
वैसे ही कुश्रुत का पढ़ना, नहीं पाप हर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 268॥

जिस पदार्थ को स्वयं जानते, गुरुजन से पूछो।
सुख दायक उन गुरु वचनों को, श्रद्धा से पूजो॥
गुरु ने जिसका बोध कराया, वह निश्चय कर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 269॥

मुनिराजों से घिरे हुए यों, ज्यों गौतम स्वामी।
प्रवचन जल में अवगाहन कर, निर्मल परिणामी॥
ज्ञान ध्यान व्याख्यान कला में, रहते तत्पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 270॥

शान्त देह से जग जीवों को, शान्त किया करते।
भव्य जनों को गणधर जैसे, वचन दिया करते॥
जिनके प्रवचन अमृत जैसे, लगते सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 271॥

वाहन तजकर पैदल चलकर, विनय भाव लाया।
हर्ष भाव से पुलकित मन हो, ज्यों श्रेणिक आया॥
प्रदक्षिणा दे वंदन करता, हाथ जोड़कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 272॥

लता गृहों के मोर नाचते, मधुर वचन सुनके।
भक्ति भाव से मैं भी सुनता, जैन वचन उनके॥
मलिन जगत को दन्त किरण से, प्रतिदिन धोकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 273॥

कान्ति चन्द्र-सी दीप्ति सूर्य-सी, धैर्य मेरु जैसा।
सदा ज्ञानमय धर्मध्यानमय, वीर्य-शौर्य ऐसा॥
चित्त नमन में, ज्ञान चरण में, रहता तत्पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 274॥

जग में ऐसा कोई नहीं जो, अब तक अमर रहा।
हम भी उस सम अमर रहेंगे, ऐसा कहीं कहा?
क्षपकराज तुम धैर्यवान हो, महाधैर्य धर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 275॥

उच्चविचारी उच्चासन पर शोभते

छब्बीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

राम चले अरु कृष्ण चले हैं, औ हनुमान चले।
पिता के आगे पुत्र चले हैं, देखो चिता जले॥
नहीं अमरपुर यहाँ वसा जो, जग में अमर रहो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 276॥

जिनने पर्वत चूर्ण किया है, सागर सुखा दिया।
इन्द्रराज का अपने चरणों, माथा झुका दिया॥
ऐसे नर भी बच न पाये, बचे जिनेश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 277॥

यही नियम सिद्धान्त अटल है, जन्मा सो मरता।
काल भेद है अन्य भेद ना, मृत्युराज करता॥
रीत रहीं श्वासों की बूँदे, सुन ले सगर अहो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 278॥

शोक सर्प ने डसा हो जिसको, जहर-लहर डारा।
गुरुजन उसका जहर उतारें, श्री प्रवचन द्वारा॥
गुरु छाया में मरण सुधारूँ, इधर-उधर ना हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 279॥

पर नारी को माता जैसा, पर धन माटी-सा।
पर व्यक्ति को निज सम मानूँ,निज तन काठी-सा॥
चर्चा में अमृत ही सीचूँ, चर्या हितकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 280॥

सदा सरलता टपक रही है, जिनके नयनों से।
और सहजता मुखरित होती, जिनके आनन से॥
वात्सल्य के दर्शन होते, सेवा लख कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 281॥

वर्ष हजार तपस्या कर जो, आदीश्वर पाये।
बारह महीने तप करके जो, बाहुवली पाये॥
वही सिद्धि अन्तर्मुहूर्त में, भरतेश्वर को हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 282॥

निज को भूला, पर में झूला, दुःख पाता प्राणी!।
गुरुवाणी सुन निज को जाने, सुख पाता प्राणी॥
स्वसंवेदी श्रुत-धर जानें, स्वपर अंतर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 283॥

जैसे तरु से पत्ते झरते, वैसे कर्म झरें।
तरु में पत्ते पुनः न जुड़ते, नाहीं कर्म जुरें॥
तभी सफल साधक का जीवन, कहते जिनवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 284॥

श्रेयस पथ में हमें जोड़ दे, शत्रु-शत्रु नाहीं।
अश्रेयस में हमें जोड़ दे, मित्र-मित्र नाहीं॥
श्रेयसकारी बुद्धि जागे, कार्य श्रेष्ठतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 285॥

जब उत्कृष्ट उदय शुभ आवे, तब सुबुद्धि जागे।
जब निकृष्ट उदय में आवे, तब कुबुद्धि जागे॥
शुभ काजों में जोड़ने वाला, मित्र हितंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 286॥

संत शिरोमणि से
मधुर मिलन का दृश्य
मधुरभाषी का

सत्ताईसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

सावधान हैं समाधान दें, न व्यवधान करें।
आर्तरौद्र ध्यानों को तजके, धर्म ध्यान धरें॥
केशलोंच आभूषण माने, श्रमण कीर्तिधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 287॥

भव्य जीव प्राणों से प्यारे, तुमको सदा लगें।
सम्यग्दृष्टि भव्य जनों पर, अद्भुत प्रेम करें॥
धन्य-धन्य हे परहितकारी, ऐसे मुनिवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 288॥

आने वाली इस मृत्यु का, नाहीं डर लगता।
गुरु सेवा फिर नहीं मिलेगी, इसका डर लगता॥
जीर्ण पत्र सम कब झर जाए, काया जर्जर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 289॥

मृत्यु-रूपी अग्नि से जलता, सूखे तृण जैसा।
ये सारा संसार देख लो, इसमें सुख कैसा॥
यह विचार कर राजा दशरथ, हुए दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 290॥

मिथ्याजल से भरी हुई है, ये संसार नदी।
जन्म मरण की भँवरे उठती, कर्दम मोह-मयी॥
महादु:खों की उठें तरंगे, रुदन भयंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 291॥

केकयी बोली भरत पुत्र को, राज्य आप दीजे।
तदनन्तर हे मेरे स्वामी, जिन दीक्षा लीजे॥
जैसा चाहा वैसा ही हो, आज धरोहर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 292॥

जिन दीक्षा यह बहुत कठिन है, फिर वन में रहना?
शीत, ऊष्ण, वर्षा ऋतुओं के, कैसे दु:ख सहना?
मैं समर्थ हूँ मुझे भार क्या, बनूँ दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 293॥

मैं निर्विघ्न तपोवन जाऊँ, वह उपाय कीजे।
आज हमारे प्रथम पुत्र का, राज तिलक कीजे॥
ऐसा करके राजा दशरथ, हुये निरम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 294॥

जैन धर्म को पाकर भी मन, पापों में डूबा।
आतम हित मैं ना कर पाया, विषयों में डूबा॥
कब धारूँ मैं मुनिवर दीक्षा, तज क्षणभंगुर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 295॥

आतम हित तो वह कर पाता, जो संयम धरता।
महाव्रती या अणुव्रती हो, दया भाव करता॥
पके फलों से झुके वृक्षसम, नम्र निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 296॥

वनवासी ये हरिण धन्य हैं, पंछी धन्य अहा।
मुनिराजों का दर्शन पाते, प्रतिदिन पुण्य रहा॥
मैं भी धन्य हुआ हूँ भगवन्! दिखे दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 297॥

समाधि भक्ति रचयिता
समाधि कराते हुए।

अट्ठाईसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

वज्रकर्ण ने सिंहोदर को, कहा खजाना लो।
राज्य, नगर, धन, देश सभी लो, सारी सेना लो॥
मुझे धर्म का द्वार दीजिये, गुरु करुणाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 298॥

तीव्र वायु ज्यों रुई ढेर को, दूर उड़ा देती।
भक्ति आपकी कर्म ढेर को, दूर उड़ा देती॥
अतः आपकी भक्ति करता, मधुर-मधुर स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 299॥

आप कुशल तो संघ कुशल है, सदा कुशलतायें।
आप सफल तो संघ सफल है, सदा सफलतायें॥
आप स्वस्थ तो संघ स्वस्थ है, आप हितंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 300॥

जिनमत धारक मैं ना चाहूँ, तृण को पीड़ा हो।
जिसने मुझको बाण दिये हैं, उसको वीणा दो॥
भाग्य वृद्धि का शुभाशीष दे, निर्भयता भर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 301॥

पुण्योदय से देव! आपके, दर्शन मैं पाया।
माटी का घट लेने आया, चिन्तामणि पाया॥
महापुण्य के परम प्रदाता, श्रमण चिदम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 302॥

कर्म भार से वजनदार हम, सदा प्रमादी थे।
अहंकार से भरे हुए थे, नित उन्मादी थे॥
अतिशय निर्मल जिन शासन दे, किया दु:खहर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 303॥

भाव रूपी घृत कर में लेकर, मन रूपी होता।
ध्यान रूपी अग्नि में होमें, कर्म रूपी समिधा॥
धर्मयज्ञ यह श्रेष्ठ यज्ञ है, करूँ निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 304॥

प्रीति रूपी बंधन में बाँधा, अत: मित्र मेरे।
और गुणों से मुझको जोड़ा, तुम सुमित्र मेरे॥
मैत्री भाव का पाठ सिखाया, ऐसे गुरुवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 305॥

पूर्वकर्म का क्षय हो जाये, नूतन बंध न हो।
ऐसी किरिया चर्या करना, भव संबंध न हो॥
मोह रहित जो क्रिया करोगे, तो तीर्थंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 306॥

खेत जोतना बीज वपाना, यह श्रम साध्य रहा।
उचित समय पर मेघ बरसना, यह सौभाग्य कहा ॥
भाग्य और पुरुषार्थ मिलें तो, कार्य शीघ्रतर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 307 ॥

एक वस्तु का त्याग परम फल, देने वाला है।
धर्म सदा सर्वत्र जीव का, दृढ़ रखवाला है ॥
धर्म रूप इस रत्नद्वीप का, रत्न हाथ धर दो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 308 ॥

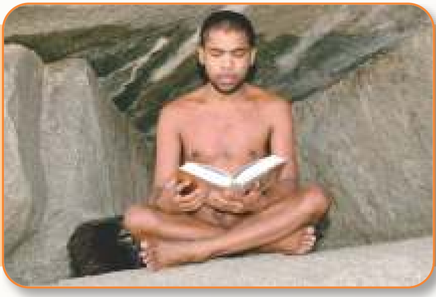

अध्ययन करते हुए

उनतीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

पुण्य कर्म ने किया अनुग्रह, जैसे गौतम पर।
तप करने तैयार हुए जो, आडम्बर तज कर ॥
वैसा ही उपकार करो गुरु, दीक्षा सत्वर हो ।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो ॥ ३०९ ॥

तीर्थंकर स्तुति

श्री आदिनाथ स्तुति

आधि-व्याधि को हरने वाले, आदिनाथ स्वामी।
धर्म तीर्थ को करने वाले, आदिनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं आदीश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 310॥

श्री अजितनाथ स्तुति

चार घातिया कर्म विजेता, अजितनाथ स्वामी।
मोक्षमार्ग के तुम हो नेता, अजितनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं अजितेश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 311॥

श्री संभवनाथ स्तुति

नर भव संभव किया आपने, संयम धर स्वामी।
तीन लोक में शान्ति प्रदाता, संभव जिन स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं संभव जिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 312॥

श्री अभिनंदननाथ स्तुति

गुण अभिनंदन, व्रत अभिनंदन, तप अभिनंदन हो।
जिन अभिनंदन! जय अभिनंदन! जप अभिनंदन हो॥
ओं ह्रीं अर्हं अभिनंदनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 313॥

श्री सुमतिनाथ स्तुति

सुमति प्रदाता सुमति जिनेश्वर! सुमरण सदा करूँ।
तुमसी मति हो, तुमसी गति हो, तेरे चरण परूँ॥
ओं ह्रीं अर्हं सुमतिप्रदाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 314॥

श्री पद्मप्रभ स्तुति

हृदय पद्म को करें प्रफुल्लित, पद्म प्रभो! स्वामी।
पाद पद्म की करें अर्चना, षट्पद शिवगामी॥
ओं ह्रीं अर्हं पद्म-प्रभवे, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 315॥

श्री सुपार्श्वनाथ स्तुति

अहो सुपारस! पास खड़ा हूँ, भव का पार्श्व मिले।
भव-भव संचित पाप कर्म सब, तेरे पास गले॥
ओं ह्रीं अर्हं सुपार्श्व मुनये, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 316॥

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी स्तुति

चन्द्रप्रभा को मैं ना चाहूँ, चन्द्रप्रभो! चाहूँ।
चन्द्र किरण को मैं ना चाहूँ, चन्द्र चरण चाहूँ॥
ओं ह्रीं अर्हं चन्द्रप्रभवे, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 317॥

श्री सुविधिनाथ स्तुति

मोक्षमार्ग की विधि बतलाते, सुविधिनाथ स्वामी।
नवधा विधियाँ हमें सिखादो, सुविधिनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं सुविधि प्रदाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 318॥

श्री शीतलनाथ स्तुति

शीतल चन्दा शीतल चन्दन, शीतलनभ-तारे।
इन सबसे भी तो शीतल हैं, शीतल जिन प्यारे॥
ओं ह्रीं अर्हं शीतल जिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 319॥

श्री श्रेयांशनाथ स्तुति

श्रेय मार्ग के आप विधाता, श्रेयस् पथ दाता।
श्रेय मार्ग दो श्रेय लाभ दो, श्रेयस् गुण गाता॥
ओं ह्रीं अर्हं सदा श्रेय से, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 320॥

श्री वासुपूज्य स्तुति

वासुपूज्य को पूज रहा मैं, वसु द्रव्यों द्वारा।
वसु गुण पाने वसुधा पूजे, वासुपूज्य न्यारा॥
ओं ह्रीं अर्हं वासुपूज्याय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 321॥

श्री विमलनाथ स्तुति

विमल ज्ञान हो विमल ध्यान हो, विमल तपस्या हो।
विमलनाथ का नाम सुमरते, दूर समस्या हो॥
ओं ह्रीं अर्हं विमल जिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 322॥

श्री अनंतनाथ स्तुति

ज्ञान अनंता, दर्श अनंता, सौख्य अनंता है।
वीर्य अनंता, गुण भगवंता, नाम अनंता है॥
ओं ह्रीं अर्हं अनंत ऋषये, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 323॥

श्री धर्मनाथ स्तुति

"चारित्तं खलु धम्मो" कहकर, धर्म सुनाया है।
साम्य भाव निज में प्रगटाकर, धर्म दिखाया है॥
ओं ह्रीं अर्हं धर्मेश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 324॥

श्री शान्तिनाथ स्तुति

निज दोषों को शान्त किया तब, परम शान्ति प्रकटी।
शान्ति कला यह तुमसे सीखी, मन की भ्रान्ति मिटी॥
ओं ह्रीं अर्हं शान्तिनाथाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 325॥

श्री कुन्थुनाथ स्तुति

"दया विशुद्धो धम्मो" कहकर, दया सिखाई है।
जिओ और जीने दो सबको, राह दिखाई है॥
ओं ह्रीं अर्हं जिनाय कुन्थ्वे, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 326॥

श्री अरनाथ स्वामी स्तुति

शुभ भावों से शुभ आतम हो, प्रवचन में गाया।
शुद्ध भाव से शुद्धातम हो, तुमने दर्शाया॥
ओं ह्रीं अर्हं अरजिनदेवाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 327॥

श्री मल्लिनाथ स्तुति

मोहमल्ल के तुम हो जेता, मल्लिनाथ स्वामी।
इष्ट देवता आप हमारे, मल्लिनाथ स्वामी॥
ओं ह्रीं अर्हं मल्लीश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 328॥

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्तुति

व्रत पालन से सुर पद मिलता, फिर शिवपद मिलता।
मुनिसुव्रत ने यह दरशाया, व्रत का फल फलता॥
ओं ह्रीं अर्हं मुनिसुव्रताय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 329॥

श्री नमिनाथ स्तुति

नियम मोक्ष का साधन कहते, नमिनाथ स्वामी।
नियम निभाओ, यम अपनाओ, हो शिव पथ गामी॥
ओं ह्रीं अर्हं नमीश्वराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 330॥

श्री नेमिनाथ स्तुति

नेमिनाथ भगवान हमारे, सदा सहारे हो।
ऊर्जयन्त गिरनार शिखर से, मोक्ष पधारे हो॥
ओं ह्रीं अर्हं नेमिनाथाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 331॥

श्री पार्श्वनाथ स्तुति

दैवयोग से मिली ऋद्धियाँ, तुम्हें समर्पित हों।
मेरे श्रम की श्रेष्ठ सिद्धियाँ, तुमको अर्पित हों॥
ओं ह्रीं अर्हं पार्श्वजिनाय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 332॥

श्री महावीर स्वामी स्तुति

महावीर की महादेशना, मंगलकारी हो।
पंचशील मय जीवन शैली, जग हितकारी हो॥
ओं ह्रीं अर्हं महावीराय, नमः निरन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 333॥

श्रमणी संघ को आशीर्वाद देते गुरु जी

तीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

जीर्ण जिनालय जहाँ-जहाँ हो, जीर्णोद्धार करो।
जिनालयों की पूजा करके, निज उद्धार करो॥
जैनधर्म को धारण करके, तप में तत्पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 334॥

फल खाता था जल पीता था, प्रवचन सुनता था।
तीनों कालों बड़ें ध्यान से, प्रभु को नमता था॥
सम्यग्दृष्टि जीव जटायु, व्रताचार धर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 335॥

कीर्तिलता जो फैली जग में, नियम बहुत पाले।
अपयश रूपी दावानल यह, जला नहीं डाले॥
अनुचित अभिलाषा ना करना, कीर्ति सदा थिर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 336॥

भला चाहने वाले तूने, अपना भला किया।
बुरा चाहने वाले तूने, मेरा भला किया॥
भले-बुरे में समता धारो, कहते गुरुवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 337॥

वृद्धावस्था ज्यों-ज्यों आये, सुन्दरता जाये।
शक्ति, बुद्धि, ज्ञान, तपस्या, घटती ही जाये॥
यहीं दीनता की माता है, सर्व हानिकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 338॥

इस अज्ञान गुफा के अन्दर, अंधकार माहीं।
कर्म आवरण की बेला में, कोई शरण नाहीं॥
सजा मिली काला पानी सी, महाभयंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 339॥

उन मुनि ने उपसर्ग सहे हैं, बिन प्रतिकार किये।
घोर वेदना सहते-सहते, समता धार हिये॥
संघ चतुर्विध सेवा करता, यहाँ कौन डर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 340॥

मेरे मन मण्डप पर छाये, धर्मलता स्वामी।
चारों आराधन की छाया, पाऊँ अभिरामी॥
हे आराधन! मात! अम्बिका, हर मोहासुर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 341॥

शुभ भावों से अशुभ कर्म को, स्वयं घटाऊँ मैं।
शुभ भावों से शुभ कर्मों को, और बढाऊँ मैं॥
शुद्ध भाव धर उभय कर्म को, पूर्णरूप हर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 342॥

अपने भावों का फल आतम, अपने को मिलता।
पर के भावों का फल आतम, पर को ही मिलता॥
यही कर्म सिद्धांत समझ सत्, कर्म निरंतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 343॥

निज आतम में लग्न लगी तो, लग्न भली प्यारे।
चेतन चंद्रोदय है उसका, खिली कली प्यारे॥
सदा भला सर्वत्र भला है, लग्न चराचर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 344॥

पाषाण को
प्रभु बनाते हुए
गुरुवर

इकत्तीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

धैर्य धन्य है, धर्म धन्य है, धन्य रूप तेरा।
तपश्चरण जो किया आपने, चिद्स्वरूप तेरा॥
जिनमत में ही ऐसा तप है, नहीं अन्यतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 345॥

परिणामों की भाव विशुद्धि, पल भर न छोड़ूँ।
सल्लेखन के समय यतीश्वर, ममता न जोड़ूँ॥
तन घट जावे तप न घटवे, क्षपक मुनीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 346॥

कर्म जनित पीड़ायें हरने, सुर असमर्थ रहे।
कौन सुखी कर सकते हैं तब, कौन समर्थ कहे।
जिस तरु को गज तोड़ न पाया, क्या तोड़े खर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 347॥

चित्त लुभातीं मन को भातीं, भाव जगाती हैं।
मन हर्षातीं सुख वर्षातीं, गुण दर्शातीं हैं॥
लगें मनोहर जिन प्रतिमायें, ज्यों नंदीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 348॥

जितनी-जितनी चिन्ता घटती, ये संसार घटे।
जितनी-जितनी चिन्ता बढ़ती, ये संसार बढ़े॥
ज्यों ईंधन के घटते-बड़ते, आग भिन्नतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 349॥

गुरु आये गुरु पूनम आयी, गुरु को याद करें।
अमर रहें गुरु शिष्य के नाते, ये फरियाद करें॥
गुरु मिलें महावीर शिष्य तो, गौतम गणधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 350॥

सबसे प्यारा सबसे न्यारा, सबसे सुन्दर है।
नन्दन वन में चन्द्रप्रभो का, लघु जिनमंदिर है॥
यह इक्क्यासी इंच का मंदिर, लघुतर शुभतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 351॥

दर्शन आराधन करने पर, ज्ञानाराधन हो।
चारित्राराधन करने पर, सर्वाराधन हो॥
आराधन की अमर पताका, मेरे कर में हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 352॥

जो मद ममता मोह बढ़ाते, चेला-चेली से।
आयु रूपी रत्न गिराते, स्वयं हथेली से॥
दुःख का अनुभव वे ही करते, आप दुःखहर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 353॥

रवि किरणों से नदियाँ सूखें, वन दावानल हों।
ऐसे ग्रीष्म काल में मुनिवर, तप में अविचल हों॥
उन मुनिराजों को नित वंदन, चरणों शिरधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 354॥

वर्षा ऋतु की जलधारा से, धुली हुई काया।
वृक्ष मूल में सदा विराजे, निर्भय निर्माया॥
अशुभ कर्म का क्षय करते जो, ऋषि योगीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 355॥

31 मार्च 2007
आचार्य पद केशलोंच में
आचार्य सुन्दरसागरजी

बत्तीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

जहाँ कौंधती हुई बिजलियाँ, क्षणिक उजाला दें।
जहाँ घोर अँधियारा करतीं, बादल-मालायें॥
बाणों जैसे जल की वर्षा, सहते समधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 356॥

जहाँ किनारे ढहा-ढहाकर, नदियाँ बहती हैं।
वृक्षों को भी बहा-बहाकर, नदियाँ बहती हैं॥
ऐसी वर्षा ऋतु में योगी, धन्य ध्यानधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 357॥

घोर निशा हो गहन अँधेरा, शीतलहर चालें।
वर्फ रूपी वस्त्रों को पहनें, समता व्रत पालें॥
ऐसे शीतकाल में योगी, परम दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 358॥

जिनने अपनी वाणी से ही, वीणा को जीता।
जिन मुनियों को शीष झुकाते, सदा राम-सीता॥
अहो योगियो! धन्य योग है, जय योगीश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 359॥

आत्म शांति जो न दे पायें, उन शास्त्रों से क्या?
आत्म हितों में जोड़ न पायें, उन मित्रों से क्या?
आत्म शान्ति को देने वाला, श्रुत एकाक्षर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 360॥

श्रम हीनों को मिले सफलता, तो सब सुखी रहें।
दिन में दीपक लेके ढूढ़ो, नाहीं दुःखी दिखें॥
किन्तु नहीं ऐसा हो सकता, श्रमण बनूँ श्रम हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 361॥

पानी पीते हुए हरिण को, अरे व्याध मारे।
त्यों भोगों में लीन जीव को, मृत्यु राज मारे॥
यहीं सोचकर ज्ञानी त्यागे, घर बन्दीघर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 362॥

नाग दमनियाँ जो न जाने, सर्प संग खेले।
वह अज्ञानी मूर्ख शिरोमणि, मृत्यु मोल ले ले॥
धर्म हीन नर वैसा जानो, कहते गुरुवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 363॥

तुमने जैसा भला किया है, वैसा कौन करे।
मात-पिता सुत भैया बहिना, सब ही मौन खड़े॥
शिवपथ का पाथेय समाधि, निज कर देकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 364॥

पद्मरुचि ने वृषभराज पर, जो उपकार किया।
चारुदत्त ने बकरे ऊपर, जो उपकार किया॥
दोनों जीव देव पद पाये, सुन जिनमन्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 365॥

ज्वालाओंमय जलते घर से , जो निकला चाहें।
कौन दयालु उनको रोकें, साधन पहुँचायें॥
उसी तरह मैं जलता प्राणी, मुझे सहारा दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 366॥

आचार्यश्री जन्मदाता को
दीक्षादान, उदयपुर (राज.)

तेतीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

आज नहीं तो कल या परसो, यह वियोग होगा।
निश्चित ऐसा जान रहा क्या? व्यर्थ समय खोगा?
इष्ट वियोगज दुःख कठिन है, संयम दुःखहर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 367॥

कहाँ अरे यह कोमल काया, कहाँ तपो ज्वाला।
तप के द्वारा जल न जाये, चम्पक सी माला॥
भव सागर को पार करेगें, संयम तपधर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 368॥

सेनापति कृतान्तवक्त्र से, बोले राम अहो।
तुम निर्वाण पुरी को जाते, कितना पुण्य कहो।
यदि निर्वाण पुरी न जाओ, संबोधन सुर! दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 369॥

मेरे द्वारा किया एक भी, जो उपकार भला।
यदि मानते हो तो सचमुच, भूलो नहीं कदा॥
यही प्रतिज्ञा आज करो तुम, संबोधन स्वर दो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 370॥

जैसी आज्ञा आप सुनाते, वैसा ही होगा।
मेरे स्वामिन्! मेरे द्वारा, पाप नहीं होगा॥
मैं कृतज्ञ कर्तव्य करूँगा, शिवपथ लाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 371॥

भव समुद्र यदि तरना चाहो, व्रत जहाज ले लो।
छेद रहित निर्दोष महाव्रत, नित पालन कर लो॥
व्रत जहाज यह ले जायेगा, स्वर्ग मोक्षपुर को।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 372॥

जैन धर्म यह उत्तम फल दे, कौन कहाँ भोगे।
चक्रवर्ती पृथ्वी पर भोगे, इन्द्र स्वर्ग भोगे॥
अधोलोक में भी सुख पाये, ज्यों नागेश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 373॥

रावण के सिर और भुजाऐं, लक्ष्मण ज्यों काँटें।
नये-नये बंधते कर्मों को, मुनिजन त्यों काँटें॥
वैसे ही मैं कर्म काँट लूँ, कर्म युद्ध जय हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 374॥

मृत्यु नहीं पावे यदि प्राणी, जन्म कहाँ पाता।
मृत्यु कहीं पावे यह प्राणी, जन्म यहाँ पाता॥
जन्म मरण का भ्रमण रुके तो, रुके भवान्तर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 375॥

पुष्प सुकोमल यौवन जानों, जीवन बिजली सा।
भोग निकेतन तन यह जानों, संध्यालाली सा॥
जल में उठते हुए बबूले, सम जग नश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥ 376॥

काया रूपी कावड़ लेकर, कर्म भार ढोये।
कावड़ियाँ बन दुःख उठाये, भव-भव में रोये॥
कावड़ियाँ ज्यों सुख पाता है, कावड़ तजकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥377॥

समवशरण देशना
औंढा (महाराष्ट्र)
24 जनवरी 2024

चौतीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

जिनशासन की अद्भुत महिमा, सुन वैराग्य भरूँ।
संयम की पतवारों द्वारा, भवजल शीघ्र तरूँ॥
खिलें हुए कमलों से सोहे, ज्यों पावा सर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥378॥

नदी किनारा कितना प्यारा, तीर्थ हमारा है।
दो चक्री दश कामदेव का, मुक्ति द्वारा है॥
रेवा नदी के तीर सुहाता, कूट सिद्धवर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥379॥

शेषाक्षत सम माथे धारूँ, सद् गुरु आज्ञा को।
निभता जाऊँ और निभाऊँ, वीर प्रतिज्ञा को॥
जीना मरना निर्भय रहना, क्यों मन कायर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥380॥

मूल मंत्र आकर्षण कर्ता, वशीकरण कर्ता।
विपदाओं का उच्चाटन कर, सम्मोहन कर्ता॥
विद्वेषण विस्तंभन कर्ता, णमोकार स्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥381॥

दूजों को हम बदल न पायें, निज को तो बदलें।
आत्म शान्ति के द्वार हमारे, चारों ओर खुलें॥
लक्ष्य साधने वाला साहस, मेरे भीतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥382॥

सिद्धशिला का पथ लम्बा है, नहीं असंभव है।
सम्यग्दृष्टि भव्य जीव को, पाना संभव है॥
मोक्षमार्ग पर चलता जाऊँ, आतम निर्भर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥383॥

तेरा दर्शन मिला मुझे तो, अमृत पान मिला।
क्या चिंतामणि कल्पवृक्ष क्या, हर वरदान मिला॥
परम प्रेय हो परम श्रेय हो, परम दिगम्बर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥384॥

जहाँ भी जो कुछ अच्छा मिलता, वह-वह ले लेना।
मूल मंत्र मेरे जीवन का, सर्वोत्तम देना॥
दान ही देना दीक्षा लेना, परम हितंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥385॥

भाग्यवान् के भाग्यभले तो, स्वयं वस्तु आये।
भाग्यहीन को मिली संपदा, घर में लुट जाये॥
अपना भाग्य स्वयं चमकाऊँ, गुरु सेवा कर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥386॥

नरभव से बड़कर क्या वैभव, हो सकता प्यारे।
सारे वैभव का वह स्वामी! जो संयम धारे॥
संयम धारो निज को तारो, लख निज अंतर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥387॥

मैं कम बोलूँ, मैं कम देखूँ, मैं कम सुना करूँ ।
आत्म सिद्धि के लिए आत्मन्, निजता चुना करूँ॥
गुनता जाऊँ धुनता जाऊँ, कर्म निरन्तर खो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥388॥

गुरु चरणों
विनयभाव

पैंतीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

कीचड़ से कंचन ले लेना, यह सज्जन नीति।
दान-धर्म में प्रीति रखना, पापों से भीति॥
नियत भली तो नियति भली हो, भला-भलाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥389॥

संकट ही चारित्र निखारे, नैतिक बल देता।
हर संकट हँसकर सह लेना, तप का फल देता॥
संकट बादल छँट जायेंगे, मन धीरज धर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥390॥

मूर्ख शिरोमणि कुछ भी कह दें, सब कुछ सह लेना।
महापुरुष के वचन मनोहर, जग से कह देना॥
यही नीति है यही रीति है, सुन प्रीतिंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥391॥

इस मुनिपद के सम्मुख जग के, सारे पद फीके।
सुर चक्री इन सब को लगते, मुनि पद ही नीके॥
सदा और सर्वत्र निरापद, पद आपद हर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥392॥

कोई उद्धारक पदवीं दें, या परोपकारी।
कोई शुभउपयोगी कह दें, समझूँ चिंगारी॥
ये सब मुझको जला न डालें, आग लगाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥393॥

ये मत सोचो ऐसे क्षण में, कौन हमारे हैं।
उपसर्गों को सहो मुनीश्वर, साथ तुम्हारे हैं॥
अरे इसे सौभाग्य मानकर, जन्म सफल कर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥394॥

भूतकाल में तुमने देखों, कितने दुःख पाये।
कभी नरक पशुगति में तुमने, नाना दुःख पाये॥
उन दुक्खों को आज मिटाने, पाँच पाप हर लो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥395॥

मोह बला के कारण तूने, भला नहीं कीना।
मोक्ष मार्ग की महा कला को, कभी नहीं लीना॥
मोह तजोगे मोक्ष मिलेगा, कहें जिनेश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥396॥

अरे भोग को रोग समझ ले, पाप ताप जानो।
विषय भोग को विष ही जानो, दुःख दाता मानो॥
क्यों नरकों में शीत ऊष्णता, महाभयंकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥397॥

व्यसन छोड़ दे विषय छोड़ दे, पाप छूट जायें।
विपदाओं के ये पहाड़ फिर, नहीं टूट पायें।
जहाँ विषमता वहाँ हि समता, धरो नरेश्वर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥398॥

वहाँ नारकी तिली-तिली तन, टुकड़े कर डालें।
मुद्गर से तन कुचल-कुचल कर, खारा जल डालें॥
नहीं पकाया जाये मुझको, तेल तलाकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥399॥

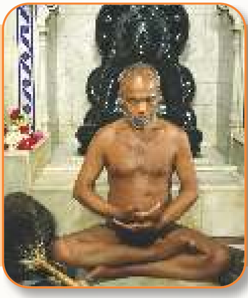

अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ शिरपुर
1 जनवरी 2024

छत्तीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्! मेरे शिर पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥

कायारूपी कावड़ लेकर, कर्म भार ढोये।
कावड़ियाँ बन दुःख उठाये, भव-भव में रोये॥
कावड़ियाँ कब सुख पाता है, कावड़ तजकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥400॥

अतिशयकारी क्षेत्र हमारा, पार्श्वगिरि प्यारा।
जय-जय पारस जय-जय पारस, गूँजे जयकारा॥
ऊँचा पर्वत मोहे मूरत, सबको सुखकर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥401॥

पार्श्वगिरि के पारस बाबा, पास बुलाते हैं।
समता रस का पान करा, समभाव जगाते हैं॥
प्रातः दोपहरी संध्या सब, पार्श्वगिरि पर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥402॥

जड़, ताना, फल, फूल, पत्तियाँ, तरु पंचांग कहे।
त्यों ही चारों आराधन के, भी पंचांग रहे॥
उद्योतन, साधन, निर्वाहन, अरु निस्तारण हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥403॥

शंकादिक सब दोष हटाना, उद्योतन जानो।
आराधन में परिणत होना, उद्यापन मानो॥
भाव निराकुल हो आराधन, गुण निर्वाहन हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥404॥

आराधन में जुटो-जुटाओ, साधन कहलाता।
इस भव से परभव ले जाना, निस्तारण गाता॥
ये पाँचों ही अंग पालना, विभव सहोदर हो।
मेरा अंतिम मरण समाधि, तेरे दर पर हो॥405॥

मुक्तिपुरी के राजभवन का, सीधा पथ जानो।
सामायिक सुख का सागर है, अनुभव कर मानो॥
पापतिमिर को दूर भगाये, समता दिनकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 406॥

कितने दृढ़तम बन्धन बाँधे, कैसे काटूँगा ?
कर्मवृक्ष की शाखाओं को, कैसे छाटूँगा ?
ये दो घड़ियाँ सबसे बड़ियाँ, सामायिक करलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ॥ 407॥

राग-द्वेष यदि नहीं करूँ तो, मैं क्या पाऊँगा।
आत्मशांति कल्याण निकेतन, मैं हो जाऊँगा॥
वस्तु शुभाशुभ कैसी भी हो, मन समताधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 408॥

सोना, चाँदी, माणिक, मोती, पर पदार्थ सारे।
कंकर-पत्थर रूप सलोने, सब न्यारे-न्यारे॥
समता समता समता धरना, निज पर लखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 409॥

इन्द्रियरूपी मृगबन्धन को, समता रज्जू लो।
मनरूपी वानर वश करने, समता साँकल लो॥
भवनागों के वशीकरण को, समता मन्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 410॥

सिद्धक्षेत्र
बड़ागाँव धसान
सूरिमंत्र देते हुए

सैंतीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन्!, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

सामायिक सम और नहीं कुछ, वस्तु कहीं पर है।
सामायिक सम भाव विमलतम, नहीं कहीं पर है॥
धर-धर समता कर सामायिक, शुद्ध भाव कर लो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 411॥

विष विषधर भी वश में होते, सामायिक द्वारा।
कर्मरूप वन जल जाते हैं, सामायिक द्वारा॥
सामायिक के महामंत्र से, प्रतिपल संवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 412॥

भरतेश्वर ने पाप मिटाये, सामायिक द्वारा।
आदीश्वर ने कर्म हटाये, सामायिक द्वारा॥
निज निंदा कर निज गर्हा कर, सामायिक रस लो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 413॥

पाप छूटना बड़ा सरल है, सामायिक द्वारा।
इसीलिए सामायिक संयम, मुनियों ने धारा॥
चार घातिया कर्म नशाये, जय भरतेश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 414॥

सामायिक सम वस्तु न कोई, वास्तु नहीं कोई।
जो सामायिक संयम धारे, सो नमोऽस्तु होई॥
सामायिक की महिमा लखकर, आतम तत्पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 415॥

धर्म बिना यदि सुख पाया तो, समझो सब पाया।
नभपुष्पों की माला पहिने, बंध्यासुत आया॥
ऐसा कभी हुआ ना होगा, बनो धर्मधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 416॥

जिनवर मुख से प्रगट हुआ जिन, वचन सुनो भाई।
सुनो-सुनो रे सुनो-सुनो रे, धर्म सुनो भाई॥
व्रत-विधान है सुख-निधान है, सबको सुखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 417॥

सोते-सोते समय बिताया, सोते जाओगे।
जागे-जागे समय बिताया, जागे जाओगे॥
यह समाधि की बेला आयी, जगो-जगाकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 418॥

सूत्र नहीं हों जहाँ-वहाँ पर, सूरि वचन मानूँ।
सूत्र वचन हो जहाँ-वहाँ पर, उनको श्रद्धानूँ॥
वीरसेन के वीर वाक्य से, हृदय धवल करलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 419॥

आत्म-ध्यानरूपी अमृत से, जो संतुष्ट हुये।
और अहर्निश अध्ययन करके, आगम पुष्ट हुये॥
अनुभव रस का पान करें वे, रसना वशकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 420॥

सद्गुरुओं के उपदेशों से, समकित सूर्य उगे।
सद्गुरुओं के उपदेशों से, मिथ्यातिमिर भगे॥
गज पारस हो, सिंह वीर हो, सुन-सुन गुरुवर को।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 421॥

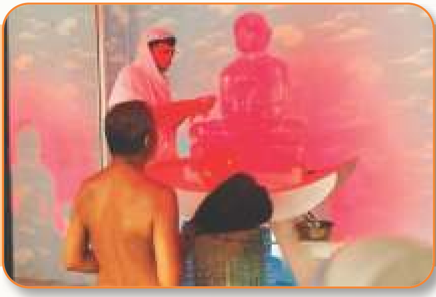

सिद्धायतन तीर्थ, सागर (म.प्र.) स्फटिकमणि की अपूर्व प्रतिमा

अड़तीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

बँधा हुआ हूँ रागद्वेष से, बंधकप्राणी सा।
भवसागर में घूम रहा है, सदा मथानी सा॥
मोह जनित अज्ञान मिटाके, सब बंधन हरलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 422॥

अस्थिर तन से सुस्थिर पद भी, पाया जा सकता।
मलिन देह से निर्मल आतम, ध्याया जा सकता॥
कर्मज काया कर्म रहित हो, विधिबंधन हरलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 423॥

आत्मशुद्धि औ आत्म सिद्धि का,क्या उपाय बोलो?
शास्त्र भक्ति कर विनय भाव से, जिन आगम खोलो॥
यही ज्ञान है यही ध्यान है, यही हितंकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 424॥

जो भी बोलूँ जैसा बोलूँ, पहले यह सोचूँ।
यश होगा या अपयश होगा, बार-बार सोचूँ॥
वचन अनिंदित आनंदित कर, निज पर हितकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 425॥

जो जितना भीतर से भरता, बाहर से खाली।
जो जितना बाहर से भरता, भीतर से खाली॥
अत: गुणों से भरना सीखूँ, जिनगुण भरकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 426॥

निज स्वभाव को नित आराधा, सो अरिहंत हुए।
निज स्वभाव को निज में साधा, सो तुम सिद्ध हुए॥
साधूँ-साधूँ निज हित साधूँ, आत्म साधकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 427॥

चारित नैया पर सवार गुरु, खेवटिया होते।
ज्ञानरूप पतवारों द्वारा, निज नौका खेते ॥
ध्यान-वायु से प्रेरित होकर, पहुँचें तटपर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 428॥

धीर बनूँ मैं, वीर बनूँ मैं, पीर हरूँ सबकी
वैरागी त्यागी बनकर के, ले लूँ निज डुबकी॥
बहुत नहीं तत्त्वार्थ पढूँ मैं, चित्त शुद्धत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 429॥

आत्म तत्त्व का मनन करें सो, मुनिवर कहलाते।
आतम हित को साध रहे सो, साधू कहलाते॥
गुरु प्रकाश भर देते मन में, मोह तिमिर हर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 430॥

तीन भुवन में सार आपने, रत्नत्रय गाया।
जिसने रत्नत्रय प्रकटाया, उसने सब पाया॥
सुर दुर्लभ रत्नत्रय वैभव, कहीं न जाये खो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 431॥

अरिहंतों सा देव न कोई, धर्म दया जैसा।
निर्ग्रन्थों सा सन्त न कोई, शास्त्र आप्त जैसा॥
देव शास्त्र गुरु धर्म जगत में, सबको हितकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 432॥

आ. विभवसागर संघ
महाराजपुर (म.प्र.)
मई 2023

उनतालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

महामन्त्र ही सिद्धमन्त्र है, कार्यसिद्धि-कारी।
णमोकार सा मन्त्र न दूजा, जग में हितकारी
मन्त्रराज यह मंत्र निराला, जपूँ ध्यानधर हो॥
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 433॥

णमोकार को जपूँ निरन्तर, मन विभोर होके।
सभी मनोरथ सिद्ध करेगा, यह मेरा होके।
गालूँ-ध्यालूँ, जपलूँ-भजलूँ, मन्त्र एक स्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 434॥

विष निर्विष हो, नाग हार हो, छुरी पुष्पमाला।
ज्वाला जल हो, सागर थल हो, बादल सुखवाला॥
महामन्त्र की अनुपम महिमा, शब्द अगोचर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 435॥

दुर्लभ नर भव का यदि इकक्षण, व्यर्थ गवाऊँगा।
कोटि-कोटि मुद्राएँ देकर, फिर ना पाऊँगा॥
जपूँ-जपूँ मैं णमोकार को, मन्त्र ध्यानधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 436॥

निज स्वरूप की शोभा है तो, आभरणों से क्या?
निज स्वरूप यदि नहीं शोभता, आभरणों से क्या ?
तजूँ आवरण करूँ आचरण, आत्म रमण कर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 437॥

उपकारी के प्रति कृतज्ञ हो, प्रत्युपकार करूँ।
यदि ऐसा मैं ना कर पाऊँ, शुभ अभिप्राय धरूँ॥
उपकर्ता के प्रति नम्रता, रखते कुलकर हो॥
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 438॥

आस्रव होता अज्ञानी को, संवर ज्ञानी को।
कर्म निर्जरा प्रतिपल होती, आतम ध्यानी को॥
शुक्ल-ध्यान से कर्म नाशकर, चिद् निकलेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 439॥

मोक्षमार्ग में आना चाहो, राह दिखाऊँगा।
मोक्षमार्ग में रहना चाहो, आसन दे दूँगा॥
मोक्षमार्ग में रमना चाहो, यह अपना घर लो॥
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 440॥

निश्चय नय से मेरा आतम, निज का कर्ता है।
निज का भोक्ता निज का ज्ञाता, निज परिणमता है॥
पर का कर्ता नहीं बनूँ मैं, निज स्वभावधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 441॥

काय शान्त है वचन मनोहर, चारित उपकारी।
करुणाधारी देव! आप हो, शुभ अतिशयकारी॥
जग-मरुथल में शरण प्रदाता, छाया तरुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 442॥

झरी चाँदनी जिस चन्दा से, वह चन्दा देखा।
चन्द्रप्रभो जिन देव हमारे, मैं उसकी रेखा॥
अविनाशी आनंद प्रदायी, चिच्चन्द्रेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 443॥

पंचकल्याणक
महोत्सव
औंढा (महाराष्ट्र)

चालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

मातगर्भ के अंध कूप से, ज्यों निकला हूँ मैं।
जिनदर्शन पा आज आपके, सफल हुआ हूँ मैं॥
सभी मनोरथ आज फलेंगे, मिले फलेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 444॥

मंगल चाहूँ मंगल देखूँ, मंगल किया करूँ।
आगम-पढ़ना, आगम-सुनना, आगम जिया करूँ॥
मंगलदाता मंगलकर्ता, जिन! मंगलघर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 445॥

जिस पद में हम सोते रहते, वह मेरा नाहीं।
तन, धन, यौवन रैन-बसेरा, समझूँ चिद् माहीं॥
क्यों घूरे पर पड़ा हुआ हूँ, मदिरा पीकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 446॥

निज स्वभाव से जो पद मिलता, वह पद मेरा है।
वह निश्चित है, वह सुस्थिर है, वहाँ न फेरा है॥
एक रूप है निज स्वरूप है, अनुभव गोचर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 447॥

देने वाले सम्यग्दृष्टि, दाता जहाँ मिलें।
लेने वाले सम्यग्दृष्टि, मुनिवर जहाँ मिलें॥
पात्रदान से स्वर्ग मिलेगा, कहते जिनवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 448॥

कानों में भर दिया रसायन, जिनगीता गाके।
नेह जगाया इन नयनों में, नयनों में आके॥
धन्य करूँ अपने जीवन को, पदरज सिर धर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 449॥

राग न उपजे, द्वेष न उपजे, मोह नहीं उपजे।
वीतरागता सदा सुहायी, समता भाव सजे॥
विभव! विभाव विकार विवर्जित, समरस स्वाद चखो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 450॥

उछल रहा आनन्द सरोवर, आतम अनुभव में।
मचल रहा मन डुबकी लेने, स्वातम सरवर में॥
समकित सावन छटा सुहानी, घिर आयी फिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 451॥

घोर परीषह बाधा हो या, रिपु उपसर्ग रचें।
वीतरागता जिन्हें सुहायी, समता भाव सहें॥
ज्यों चंदन में विष न व्यापे, लिपटे विषधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 452॥

निज महिमा लख निज में प्रीति, उपजाये ज्ञानी।
आत्म गुणों से परम प्रभावित, निज आतम ध्यानी।
निजता चाही निजता आयी, परख-परख पर खो
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 453॥

ये संसार छुड़ाऊँ कैसे, प्रभु! कुछ तो बोलो।
जैनागम में तीव्र भक्ति धर, जैनागम खोलो॥
धवल सुनाकर भाव धवलता, आतम में भरदो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 454॥

जिनबिम्ब प्रतिष्ठा,
औंढा (महाराष्ट्र)
24 जनवरी 2024

इकतालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

जिन ने कर्मों को देखा है, उनने कर्म कहे!
मुनिराजों ने जो कर्मोदय, समता भाव सहे॥
लिया कर्ज मैं चुका रहा हूँ, कर्ज मुक्त करदो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 455॥

दिशा-दिशा से देश-देश से, ज्यों पंछी आते।
वृक्ष-वृक्ष पर रैन बिताते, प्रातः उड़ जाते॥
आना-जाना लगा हुआ है, यह घर तरुवर हो
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 456॥

आने वाले कल के प्राणी, कैसे सुख पायें ?
इस हेतु हम बने मुनीश्वर, शिवपथ दरशायें॥
यह विचार कर श्री वृषभेश्वर, बने मुनीश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 457॥

वर्द्धमान का यह जिनशासन, वर्द्धमान होवे।
युगों-युगों तक जैनधर्म यह, कीर्तिवान होवे॥
इसी लक्ष्य की सिद्धि हेतु, कार्य निरन्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 458॥

जो विदेह में मोक्षमार्ग की, विधि दरशाते हैं।
दिव्य-ध्वनि दे भव्य जनों के, मन हरषाते हैं॥
जय सीमंधर जय सीमंधर, जय सीमंधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 459॥

खोजूँ-खोजूँ खोज सकूँ तो, निज वैभव खोजूँ।
हीरा-पन्ना, माणिक-माणियाँ, पुद्गल क्यों खोजूँ॥
सम्यग्दर्शन चेतन हीरा, निज आतम धरलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 460॥

अभी बुलाना अभी बुला लो, अभी चला आऊँ।
जहाँ बुलाना वहाँ बुला लो, वहीं चला आऊँ॥
नाथ! बुलाना नहीं भुलाना, भला भलेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 461॥

इधर तराजू के पलवे पर, यह नवकार रखो।
उधर तराजू के पलवे पर, तीनों लोक रखो॥
णमोकार हो जिस पलवे पर, वही गुरूत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 462॥

यह भक्तामर मन्त्र शास्त्र है, यन्त्र शास्त्र प्यारा।
यह भक्तामर तन्त्र शास्त्र है, सन्त शास्त्र न्यारा॥
अक्षर-अक्षर बीजाक्षर है, भज भक्तामर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 463॥

सत् पुरुषों की कुल विद्या है, सत्य मधुर वाणी।
सीखो भैया! सिखा रही है, माता जिनवाणी॥
बोल सको तो बोलो भैया, मधुर-मधुर स्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 464॥

सत्य वचन जो जगत पूज्य हैं, मैं उनको बोलूँ।
नय-प्रमाण के न्याय तराजू, पर उनको तोलूँ॥
कहीं भी बोलूँ कभी-भी बोलूँ, सोच समझकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 465॥

मुनिश्री दुर्लभसागर, संधानसागरजी संघ मिलन

बयालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥

दया नहीं तो दीक्षा लेना, व्यर्थ ठहरता है।
दया नहीं तो घर का तजना, व्यर्थ ठहरता है॥
जहाँ दया है वहाँ सिद्धियाँ, रहती आकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 466॥

निज सम पर को जानो मानो, अरु रक्षा करना।
यही अहिंसा व्रत कहलाता, दया भाव धरना॥
निष्प्रमाद हो रक्षा करलूँ, धर्म मानकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 467॥

रत्न भरी तू पृथ्वी ले ले, या निधियाँ ले ले।
ओ भोले तू जल्दी मर जा, या अखियाँ दे दे॥
तोभी कोई ना चाहेगा, रहूँ दया धर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 468॥

भक्ति काव्य यह शक्ति काव्य यह, युक्ति काव्य जानो।
भक्तामर स्तोत्र निराला, मुक्ति काव्य मानो॥
भक्त अमर हो, भक्त अमर हो, सुन भक्तामर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 469॥

णमोकार ही महामंत्र है, णमोकर श्रुत है।
णमोकार ही धर्मरूप है, णमोकर व्रत है॥
जपूँ-जपूँ में णमोकार को, जो भी अवसर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 470॥

सुख में दुःख में, दुर्गम पथ में, या जीवन पथ में।
यान-भवन में, जन्म-मरण में, वन-उपवन रथ में॥
ध्याऊँ-ध्याऊँ णमोकार को, गिरि-सरिता सर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 471॥

विघ्नदूर हों, कर्मचूर हों, इस भक्तामर से।
सभी मनोरथ शीघ्र पूर्ण हों, इस भक्तामर से॥
सर्व सिद्धियाँ देने वाला, यह भक्तामर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 472॥

ज्यों कमलों की नीलप्रभा से, नील सरोवर हो।
त्यों गुरुजन के संस्कार पा, शिष्य शीलधर हो॥
गुरु सन्निधि का यह प्रभाव है, निरहंकार नर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 473॥

सागर तरना बहुत सरल है, ज्यों पुल पाकर के।
भवजल तरना स्वत: सरल है, गुरुकुल आकर के॥
हेतु-सेतु गुरु देव मिले हैं, पार समुंदर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 474॥

सज्जन देते हमें सिद्धियाँ, उन्हें नमन मेरा।
दुर्जन देते हैं प्रसिद्धियाँ, उन्हें न मन मेरा॥
अपना-अपना भाव चिरन्तन, प्रेरित यह नर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 475॥

गुण-ग्रहण बिन चैन न पड़ती, जैसे सज्जन को।
दोष कथन बिन चैन न मिलती, वैसे दुर्जन को॥
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित, सज्जनता भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 476॥

आचार्य संघ
सिद्धवरकूट यात्रा

तेतालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

जिनशासन की वसुन्धरा पर, ध्यान नगर ऐसा।
चारित रूपी परकोटा से, घिरा नगर जैसा॥
विवेकरूपी दरवाजों से, दृढ़तम सुन्दर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 477॥

तीन गुप्ति के बज्र किवाड़े, लगे हुए जिसमें।
तपश्चरण के सुभट खड़े हैं, निर्भय नर इसमें॥
संयमरूपी लगे बगीचे, परम मनोहर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 478॥

चलूँ-फिरूँ या उठूँ-बैठलूँ, कभी कहीं पर हो।
सुख में दुख में, सभी दशा में, रहूँ ध्यानधर हो ॥
गिरि-सुमेरु सा निश्चल मन हो, मेरे जिनवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 479॥

तोते के तन सा कोमल तन, मन तो मुनिमन है।
कोकिल कंठी मीठी वाणी, सुनते भविजन हैं॥
चन्द्रमणी सा भाव-भवन है, अमृत झर-झर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 480॥

धर्महीन नर जिया हुआ भी, मरा हुआ जानो।
धर्मलीन नर मरा हुआ भी, जिया हुआ मानो॥
धर्म सहारा अधर्म कारा, सुखकर दुःखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 481॥

शक्तिहीन होने पर भी जो, व्रत संयम धारे।
शक्तिमान से सहसगुणा फल, वह पावे प्यारे॥
जो चाहोगे वह पाओगे, नर संयमधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 482॥

शक्तिहीन को एक दिवस भी, सहस दिवस जैसा।
दीक्षा पाले एक वरष तो, सहस-बरष जैसा॥
ऐसा अद्भुत फल बतलाया, गुरु ने गुरुतर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 483॥

वासुपूज्यसागर की भूपर, चन्द्रप्रभो राजे।
धन्य महेवा जन्म धरा ये, तीर्थरूप साजे॥
वासुपूज्य ने श्रेय दिया है, मुनिवर श्रेय अहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 484॥

ऐसा कोई मन्त्र नहीं जो, मैंने नहीं जपा।
ऐसा कोई यन्त्र नहीं जो, मैंने नहीं भजा॥
वासुपूज्य सागर जी कहते, सुन श्रेयस्कर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 485॥

संघ चतुर्विध भक्तिभाव से, करता सेवा है।
वासुपूज्य सागर की धरती, नगर महेवा है॥
तीर्थभूमि के दर्शन करने, आते मुनिवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 486॥

अभी न आना अभी न आना, गुस्सा से कह दो।
कभी न आना, कहीं न आना, गुस्सा से कह दो॥
क्रोध विजय का मंत्र यही है, क्षमाभाव धरलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 487॥

जंगल में मंगल
आचार्य संघ

चौबालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

जैसे-जैसे लखता जाऊँ, वैसा लिख लूँगा।
जितना-जितना लिखते जाऊँ, वैसा लख लूँगा।
लिखना है सो लखना सीखूँ, लिखना लखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 488॥

पूज्य बड़े बाबा का मंदिर, बड़ा अनोखा है।
भवसागर से पार उतरने, बढ़िया नौका है॥
जय-जयकारा गूँज रहा है, विद्यासागर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 489॥

विषयों की आशा न पालूँ, सर्व दोष टालूँ।
समता भावों संघ सम्हालूँ, निज आतम ध्यालूँ॥
पूज्य बड़े बाबा जी मेरे, वरदाता वर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥490॥

करूँ प्रार्थना तुमसे भगवन्! शिर पर हाथ धरो।
मेरे सारे दोष निकालो, अरु निर्दोष करो॥
इष्ट प्रार्थना पूरी करना, नाथ! निरन्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥491॥

आत्मशान्ति की राह खोजते, खजुराहो आये।
शान्ति विधाता शान्तिनाथ के, शुभ दर्शन पाये॥
कला तीर्थ पर आत्मकला का, संवेदन करलो!
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 492॥

ग्रीष्मकाल में गिरि-शिखरों पर, बैठूँ ध्यान धरूँ।
शीतकाल में चौराहे पर, आतमध्यान करूँ॥
वर्षा ऋतु में तरुतल रहकर, धर्म-ध्यान धर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 493॥

गुणीजनों की गणनाओं में, प्रथम गिना जाऊँ।
किन्तु दोषियों की गणना में, नहीं गिना जाऊँ॥
गुणों-ग्रहण का भाव रहे नित, गुण ही गुणकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 494॥

जिन-जिनने भी प्रभु को देखा, आतम सुख पाया।
जिन-जिनने भी सुना प्रभु को, आगम श्रुत पाया॥
परम मित्रता अनुभव करते, जीव परस्पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 495॥

भिक्षा कर लूँ, वन में रहलूँ, अरु थोड़ा खालूँ।
अनुचित भाषण कभी न बोलूँ, वन के दुःख सहलूँ॥
नहीं नींद लूँ, नींद नीद दूँ, जगूँ-जगाकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 496॥

नश्वर तन से अविनश्वर सुख, पाया जा सकता।
फिर क्यों चेतन कारागृह के, बंधन में फसता॥
साधुसंघ में कब आ जाऊँ, मोह छोड़कर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 497॥

वनिता बेड़ी काटी मैंने, ब्रह्मचर्य धरके।
अब रत्नत्रय विद्या पाऊँ, मूल्यांकन करके॥
ना जाऊँ मैं ना जाऊँ मैं, अब वापिस घर को।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 498॥

प्राचीन प्रतिमा प्रतिष्ठा

पैंतालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

ज्यों गन्ना पानी पी लेता, पानी मधुर बने।
ज्यों गैया पानी पी लेती, पानी दूध बने॥
त्यों ही पात्र दान की महिमा, भव-भव सुखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 499॥

यथा नीम मैं गया हुआ जल, कड़वा हो जाता।
यथा सर्प को दूध पिलाया, विषमय हो जाता॥
त्यों अपात्र को दिया दान भी, भव-भव दुखकर हो॥
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 500॥

आत्मशांति का अनुभव करते, रैन बिताऊँ मैं।
सदा चलूँ निर्ग्रन्थ पन्थ में, अवसर पाऊँ मैं॥
हे भगवन्! मम यही प्रार्थना, नित्य निरन्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 501॥

जीव कभी पुद्गल ना होगा, पुद्गल जीव नहीं।
ज्ञान कभी दर्शन न होगा, दर्शन ज्ञान नहीं॥
अगुरुलघुत्व गुण यह कहता है, समझो नयधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 502॥

तपी बनूँ मैं, श्रुतीबनूँ में, व्रती बनूँ चेता।
ध्यान धुरा को धारण करके, मुक्ति पथ नेता॥
आतम-आतम में रम जाये, आतम कृत्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 503॥

वचन प्रभो के चरण गुरु के, जग कल्याण करें।
ऐसे ही आचरण निरन्तर, मुझको शरण धरें॥
समवशरण सी शरण मिली है, यही मानकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 504॥

निज को पूछूँ निज को चाहूँ, निज को ही देखूँ।
परम ज्ञानमय मोह विनाशी, निज को ही लेखूँ॥
जीव जुदा है जुदा है पुद्गल, भेद ज्ञान कर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 505॥

जो चंचल मुनि संवर करने, में, असमर्थ रहा।
बिन चावल के भुसी कूटना, उसका लक्ष्य रहा॥
बिन संवर के मुनि तप दीक्षा, व्यर्थ बराबर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 506॥

मोक्ष तत्त्व की माता क्या अवि-पाक निर्जरा है।
एक मात्र मुनियों के होती, आत्म निर्भरा है॥
ज्यों पाले में फल का पकना, होता सत्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 507॥

जैसे-जैसे कर्म निर्जरा, होती जाती है।
मुक्ति नायिका वैसे-वैसे, पास में आती है॥
आज तपस्या के मंडप में, मुक्ति स्वंयवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 508॥

दुर्लभ समता का यह अवसर, फिर कब आयेगा ?
क्रोध किया तो दुर्लभ अवसर, व्यर्थ में जायेगा
समता धारूँ, समता धारूँ, यही सोचकर हो
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 509॥

आदिनाथ प्रभु,
गुलावरा,
छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

छियालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

नय-प्रमाण दो पंखों द्वारा, श्रुत पंछी उड़ता।
जल, थल, नभ में उसे रोकने, कोई नहीं अड़ता॥
स्याद्वाद की गति अवाध है, कहते श्रुतधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 510॥

स्याद्वाद निर्दोष वचन सुन, तत्त्व प्रतिष्ठा है।
द्रव्य और पर्याय प्रतिष्ठा, शास्त्र प्रतिष्ठा है॥
न्यायशास्त्र के निरूपणों का, मूलाधार कहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 511॥

मन हो निर्मल भाव विमल हों, प्रतिक्रमण द्वारा।
महत्त्वपूर्ण क्षण प्रतिक्रमण हो, महाश्रमण द्वारा॥
प्रतिक्रमण का महामहोत्सव, आज यहाँ पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 512॥

चिन्तामणि हम क्यों चाहेंगे, वह तो पत्थर है।
कल्पवृक्ष हम क्यों चाहेंगे, वह भी तरुवर है॥
माँग रहे नवकार हमारे, कानों में भरदो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 513॥

दोष कहीं हो कैसा भी हो, कैसे शुद्ध करूँ।
ममता तजके समता भजके, कायोत्सर्ग धरूँ॥
एक बार हो लक्ष्यधार हो, बारम्बार अहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 514॥

धर्म की सिद्धि चरित की शुद्धि, आवश्यक करते।
ज्ञान ध्यान तप की उत्पत्ति, आवश्यक करते॥
ये आवश्यक समय-समय पर, योग शुद्ध कर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 515॥

आवश्यक कर्त्तव्य किये बिन, जो तप धार रहा।
बिन पैरों के मेरु शिखर पर, चढ़ना चाह रहा॥
वह पंछी क्या गगन उड़ेगा, जिसे नहीं पर हो॥
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 516॥

मुनितन मैला मुनिमन उजला, शुद्ध कहाता है।
जैसे घृतघट मलिन हुआ भी, शुद्ध कहाता है॥
ये है महिमा मूलगुणों की, कहते गुणधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 517॥

जो -जो गुण मुझको भाये हैं, वह-वह गुण गाये।
जो-जो गुण मैंने गाये हैं, वह-वह गुण पाये॥
भाना-गाना-पाना पाकर, जाना शिवपुर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 518॥

काल के आगे भला किसी की, क्या चलती बोलो।
अत: सम्हल जा सावधान हो, दीक्षा व्रत लेलो॥
श्री गुरुवर की सीख मान लूँ, मुनि संयम धर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 519॥

वस्तु एक है गुण अनेक हैं, अनेक पर्यायें॥
अनेकान्तमय वस्तु तत्त्व है, जिनवर दरशायें॥
शक्ति, अंश, गुण, धर्म, अंत ये, पर्यायाक्षर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 520॥

आचार्य विमर्शसागरजी
से मिलन
गुरुभ्राता मिलन
शाहगढ़ (म.प्र.)
जनवरी 2023

सैंतालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

शुभ भावों की सर्वोषधियाँ, स्वस्थ बनाती हैं।
प्रसन्नता की परमौषधियाँ, पुष्ट बनाती हैं॥
क्षमा भाव क्षमता प्रकटाये, रहूँ क्षमाधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 521॥

जितना पाऊँ उतना अच्छा, शुभाशीष गुरु का।
विद्या बुद्धि विभव बढ़ता, शुभाशीष प्रभु का॥
आशीषों की उपस्थिति दे, सन्निधि गुरुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 522॥

दे दो गुरुवर! दे दो गुरुवर! शुभाशीष कर से।
अक्षयदानी आप मिले हो, क्यों मागूँ पर से॥
शुभाशीष सर्वोत्तम दौलत, रहे सदा थिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 523॥

सम्यग्दर्शन साथ रहे तो, नरक मिले ले लूँ ?
मिथ्यादर्शन साथ रहे तो, स्वर्ग नहीं मैं लूँ ?
क्योंकि नारकी नरक निकलकर, नर तीर्थंकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 524॥

सम्यग्दर्शन रहित देवगण, आर्त ध्यान करते।
फिर मिथ्या भावों से सुरगण, थावर तन धरते।
सम्यग्दर्शन इन्द्र बनाये, जिन तीर्थंकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 525॥

सम्यग्दर्शन साथ रहे तो, शुभ संयोग मिलें।
शिक्षा, दीक्षा, सफल परीक्षा, तीनों योग पलें।
सदा सफलता चरण चूँमती, ज्यों कन्यावर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 526॥

निंदनीय हैं भोग जहाँ पर, वहाँ जन्म न हो।
वंदनीय शुभ योग जहाँ पर, वहाँ जन्म जिन! हो॥
नहीं प्रार्थना नहीं याचना, बिन याचे वर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 527॥

ज्ञानी बैठा ज्ञान नाव में, स्वंय पार जाता।
जो ज्ञानी की संगति करता, वह भी तर जाता॥
आजा-आजा तरजा-तरजा, कहते गुरुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 528॥

सकल कला का मूल यही है, ज्ञान कला होना।
ज्ञान कला बिन एक कला भी, नहीं व्यर्थ खोना॥
ज्ञानी होवे केवलज्ञानी, ज्ञान विनयकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 529॥

ज्ञान दिया है, दिया दिया है, कुछ भी लिया नहीं।
मेरा हित में मेरे सुख में, क्या कुछ किया नहीं॥
परहित कर तुम भूल गये हो, तुम्हें यादकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 530॥

आप याद तो सभी हैं, किसको याद करूँ।
मेरी यादों में तुम रहना, ये फरियाद् करूँ॥
तुम्हें यादकर जिऊँ निरन्तर, मरूँ यादकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 531॥

गुरु दर्शन

अड़तालीसवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥मन हो

ज्ञान प्रीति दे ज्ञान कीर्ति दे, ज्ञान शांति देता।
ज्ञान नीति दे पापभीति दे, ज्ञान क्षान्ति देता॥
ज्ञान पूज्यता ज्ञान सम्पदा, शुद्ध ज्ञानकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 532॥

चंचल मन गज विषय वनों में, सदा भटकता है।
गुणरूपी तरुवर उखाड़कर, कहीं पटकता है॥
ज्ञानरूपी साँकल से बँधता, यह मन कुंजर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 533॥

विषय-भोग के दावानल में, झुलस रहा प्राणी।
तृष्णा ज्वाला बढ़ती जाये, समझो रे ज्ञानी॥
जलती ज्वाला आप बुझाओ, श्री गुरु जलधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 534॥

कौन भला है कौन बुरा है, अरे कौन जाने।
तत्त्व ज्ञान बिन क्या अपना हित, क्या परहित माने॥
आत्मशांति का मूलमंत्र यह, तत्त्वज्ञान करलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 535॥

सुख चाहो तो सम्यग्दर्शन, व्रत धारण कर लो।
सम्यग्दर्शन महातीर्थ में, अवगाहन कर लो॥
भूपर से वह तिरता जाता, ऊपर-ऊपर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 536॥

वह पाऊँ जो कभी न पाया, कहीं नहीं पाया।
वह भाऊँ जो कभी न भाया, कहीं नहीं भाया॥
दुर्लभ मानुष भव सार्थक हो, तपश्चरण करलो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 537॥

दुःखी सुखी हो जाते जग में, सुखी दुःखी होते।
कोई दुःखियाँ दुःख ही रोते, सदा दुःखी रहते॥
किन्तु सुखी नर सुखी न रहते, सुख क्षणभंगुर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 538॥

धनी यहाँ निर्धन हो जाते, निर्धन धनी बनें।
कोई निर्धन निर्धन रहते, नाहीं धनी बनें॥
धनी सदा धनवान न रहते, यह धन नश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 539॥

यह नर जिस नारी को चाहे, नारी और किसे।
नारी दूजे नर को चाहे, वह नर और किसे॥
राग-द्वेष की परम्परा ही, कितनी दुःखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 540॥

सरस्वती की प्राण प्रतिष्ठा, जिनकी कविता में।
जिन शासन की अपूर्व निष्ठा, जिनकी कविता में॥
मानतुंग से महामुनीश्वर, कविवर गुरुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 541॥

कभी मिला ना, कहीं मिला ना, वह सत्संग मिला।
तुमको पाकर मेरे भगवन्, आतमराम मिला॥
सब दुःख हर्ता सब सुख कर्ता, संगति सुखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 542॥

गुरु चरणों में
शिष्य-शुद्धोपयोग

उनन्चासवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

पूज्य पुरुष की चरण वंदना, जो भी करते हैं।
स्वयं पूज्यता को पाकर वे, सुखमय रहते हैं॥
उनकी शुभ यश बिरदावलियाँ, नगर-नगर में हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 543॥

जिन मंदिर की ध्वजा फहरकर, मुझे बुलाती है।
अथवा मेरे यश वर्णन को ही, फहराती है॥
आओ-आओ मंदिर आओ, यह जिन मंदिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 544॥

समवशरण रूपी सरवर के, राजहंस आये।
ऐसे मुनिवर के शुभ दर्शन, आज यहाँ पाये॥
पूजन करता वंदन करता, बारम्बार अहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 545॥

प्यासा चातक स्वाती बूँद को, ज्यों चाहा करता।
व्याधी ग्रस्त नर औषधियों को, ज्यों चाहा करता॥
काल लब्धि से प्रेरित होकर, मैं गुरुद्वार अहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 546॥

नंद-नंद वधस्र्व विजय हो, ऋद्धि-सिद्धि बड़े।
नयनानंदि वर्धमान हो, सुख समृद्धि बड़े॥
पूज्यपाद ये वहाँ पधारें, जहाँ पुण्यपुर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 547॥

उदित सूर्य का अस्त सुनिश्चित, ज्यों होता मानो।
देवों का भी पतन सुनिश्चित, निःशंकित जानो॥
जैन धर्म ही परम शरण है, रहो धर्मधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 548॥

जिनके दर्शन को पाने हम, कब से तरस रहे।
आशीषों की परम्परा बन, गुरुवर बरस रहे॥
दुर्लभ दर्श विशुद्धि पायी, गुरु दर्शन कर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 549॥

इष्ट जनों का दर्शन देखो, प्रीति बढ़ता है।
मुख प्रसन्नता के द्वारा निज, भाव दिखाता है॥
भाव पुस्तिका सब पढ़ लेते, नयना लखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 550॥

शिष्य सृष्टि के सृजन काल की, मैं तेरी रचना।
कितने कोमल हाथों से की, तूने संरचना॥
आत्म कला के कलाकार तुम, आत्म कलाधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 551॥

लक्ष्मी पता पूँछती आती, उद्योगी नर का।
सरस्वती ज्यों पता पूँछती, शिष्य विनयधर का॥
कीर्ति कौमुदी चली गयी है, लोक शिखर पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 552॥

जैसा उज्ज्वल चारित होगा, वैसा चित्र बनें।
जैसे निश्छल भाव रखोगे, वैसे मित्र मिलें॥
चित्र-मित्र की परम्परा यह, स्वभाव निर्भर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 553॥

आचार्यगण दर्शन
आ. सुन्दरसागर जी
आ.सुनीलसागर जी
आ.विभवसागरजी
आ. सुवीरसागरजी
बासबाड़ा (राज.) 2021

पचासवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

पिच्छी क्या दी हमें आपने, संयम भाव दिया।
इसी बहाने पिच्छी लेकर, गुरु मन मोह लिया॥
इन्द्र वृन्द आनंदित हों ज्यों, लख नंदीश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 554॥

तेरा दर्शन मेरे मन में, प्रीति जगाता है।
तेरा दर्शन मेरे मन, आनन्द बढ़ाता है॥
दर्शनदाता तेरा दर्शन, मिले भवान्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 555॥

कितने पावन मंत्रों से दी, गुरु तुमने दीक्षा।
रोम-रोम में समा गयी है, ये संयम शिक्षा॥
मेरे हर प्रश्नों के गुरुवर!, अंतिम उत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 556॥

छत्रसाल की पुण्यधरा पर, छत्रयोग छाये।
मानों अवधपुरी में अपने, रामलला आये॥
राम-भरत सा मिलन देखता, धरती अंबर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 557॥

नहीं रूप है नहीं रूपसी, नहीं रुपैया है।
शुद्धातम में रमने वाला, मेरा भैया है॥
जिनके मुख से मुखरित होता, समयसार स्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 558॥

हीरा नगरी में चल आये, ये चेतन हीरा।
संघ सहित में अपने लाये, ये कितने हीरा
हीरा कहते राही बन जा, शिवपथ आकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 559॥

तेरे गुरुकुल का कुल गौरव, बनकर सदा रहूँ।
सेवा हो सौभाग्य हमारा, सेवा किया करूँ॥
गुरु सेवा की गुरु सम्पदा, जीवन में भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 560॥

कर्मों का क्षय करने वाला, जैन धर्म दे दो।
क्षमाभाव दो क्षेम कुशल दो, सन्त प्रेम दे दो॥
यही समय है सही समय है, संस्कार कर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 561॥

पूर्व जन्म के संस्कार ही, हित प्रेरित करते।
वर्तमान के संस्कार ही, जप-तप से भरते॥
सदाचार दो समाचार दो, समयसार भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 562॥

सम्यग्दर्शन प्राप्त हुआ तो, सब सुख प्राप्त हुआ।
मेरा जिनवर मेरा प्रभुवर! निश्चित आप्त हुआ॥
भव अनन्त का अन्त हुआ अब, आश्वासन कर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 563॥

ज्यों जहाज के बिना उदधि में, सागर कौन तरे।
त्यों ही गुरु उपदेश बिना भव, सागर कौन तरे॥
गुरु मिलते ही गुण मिल जाते, गुरु गुणोत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 564॥

उपाध्याय
विकसन्तसागरजी

इक्यानवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

भातृप्रेम गुरु प्रेम जगत में, उत्तम प्रेम कहे।
गुरु प्रेम ही उभय लोक में, मंगल क्षेम कहे॥
हृदय सदन में गुरु विराजो, मोह तिमिर हर लो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 565॥

दिल से चाहूँ दिल से पूछूँ, दिल से याद करूँ।
हे गुरुवर तुम कब आओगे, ये फरियाद करूँ॥
गंगा-जमुना बहती जाये, गुण चिन्तन कर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 566॥

सन्तजनों का मिले समागम, सारे पाप हरे।
दोष हरे सन्तोष करे सब, मन सन्ताप हरे॥
तुष्टि-पुष्टि आनंद प्रदाता, सन्त सुखाकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 567॥

रूप छटाएँ छट जायेंगी, ज्यों संध्यालाली।
भोग सम्पदाएँ विषबल्ली, तन सुमनस डाली॥
आयु पल-पल घटती जाये, ज्यों अंजुली जल हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 568॥

अपने मन की प्रसन्नता को, मस्तक पर धारें।
साम्यभाव का अद्भुत वैभव, जग में विस्तारें॥
मंद-मंद मुस्कान किरण से, लगते सुन्दर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 569॥

कार्य सिद्धि के लिए जाइये, कार्य सिद्धि होवे।
शुभ यात्रा कर शीघ्र आइये, हमको सुख होवे॥
तुम अनाथ के नाथ मुनीश्वर, रहो कृपाकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 570॥

पागल कुत्ते का काटा विष, नजर न आता है।
किन्तु वर्षाऋतु में वह विष, असर दिखाता है॥
पाप कर्म त्यों दुःख देते हैं, समय बिताकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 571॥

अपथ्य सेवन करने से ज्यों, ज्वर बढ़ जाता है।
त्यों ही पापाचरण मनुष का, पाप बढ़ाता है॥
नरकों में दुख पाता प्राणी, बिलख-बिलख कर रो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 572॥

धर्मसृष्टि के सूत्रधार हो, आदिनाथ स्वामी।
कर्मभूमि के कलाधार हो, आदिनाथ स्वामी॥
कल्पवृक्ष सम फल दाता जिन, प्रथम जिनेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 573॥

पुण्य सम्पदा तुमको चाहे, निज माता जैसा।
लज्जा गुण बन सदा सहेली, देती सुख साता॥
गुण परिजन ही साथ में रहते, चित्त उदार अहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 574॥

ज्यों चंदा की धवल चाँदनी, धरा धवल करती।
त्यों ही प्रभु की धवल कीर्तियाँ, विश्व धवल करती॥
पावन प्रभु हो पावन कर्ता, पावनता भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 575॥

श्री नेमिनाथ भगवान
अतिशय क्षेत्र
नवागढ़
तीर्थ वंदना 2024

बावनवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

भव रोगों से दु:खी जनों को, आप सुखी करते।
वचनामृत की औषधियाँ दें, सर्व रोग हरते॥
हे सुख दाता सुखी रहो तुम, हमको सुखकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 576॥

विरागसागर गुरुवर ने जो, मंत्र सिखाये हैं।
शिष्य प्रशिष्यों के वचनों में, गुरु समाये हैं॥
मान लीजिए गुरुवर कहते, बनो विनयधर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 577॥

गुरु सेवा से खुश हो गुरु ने, राज बताये हैं।
विमल सिन्धु की परम्परा से, वही गुण आये हैं॥
मुनि मुद्रा में जिन मुद्रा लख, स्वागत तत्पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 578॥

जिस भूमि में रत्न भरे हों, ऐसी जो लगती।
ज्यों सूरज को ओट में राखे, पूर्व दिशा लगती॥
जिनवाणी सी जग को प्यारी, वाणी गुरुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 579॥

सरस्वती का क्रीड़ा स्थल था, जिनका माथा।
उन युग दृष्टा, उन युग सृष्टा, की पावन गाथा॥
मुनियों को आदर्श निराले, विद्यासागर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 580॥

जो सन्तोष मिले अमृत से, वैसा कहाँ मिले।
विद्यासागर संत निराले, दूजे कहाँ मिलें॥
विद्यासागर जैसे ही थे, विद्यासागर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 581॥

क्या-क्या नहीं सिखाया तुमने, क्या-क्या ना दीना।
आत्म सिद्धि के महामंत्र गुरु, कानों भर दीना॥
बेटा कहने वाले गुरुवर, एकमात्र तुम हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 582॥

प्रतिभास्थलियों की प्रतिभा, कौन निखारेगा ?
दिव्य दयोदय के आँगन में, कौन पधारेगा ?
ढूढ़ रहा जग कहाँ गये तुम, विद्यासागर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 583॥

जितना याद कराया तुमने, उतना याद करूँ।
यादों में दिन-रैन बिताऊँ, गुरु संवाद करूँ॥
ज्ञान गुरु से मिलने पहुँचे, विद्यासागर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 584॥

पार्श्व प्रभु के शुभ दर्शन से, हमको यूँ लागा।
जन्म-जन्म के शुभ कर्मों से, भाग्योदय जागा॥
अतिशयकारी अचरजकारी, पार्श्वप्रभुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 585॥

ज्ञान लाभ दो दर्श लाभ दो, चरित लाभ स्वामी।
आत्म लाभ दो धर्मलाभ दो, स्वस्थ लाभ स्वामी॥
मन वांछित फल देने वाले, पारसप्रभुवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 586॥

गुरुवर आज
मेरी कुटिया में
आये हैं।

तिरपनवाँ पर्व

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-माधि, तेरे दर पर हो॥

पारसप्रभु के दर्शन पाने, मैंकचनेर चला।
चिंतामणी के श्री चरणों में, चिंतन मणी मिला॥
चिंताएँ सब दूर हुईं है, गुण चिंतनकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 587॥

ज्यों भौरों की संगति पाकर, खिलें चमेली हो।
ज्यों चंदा की किरणें पाकर, खिलें कुमुदनी हो॥
त्यों ही गुरु वचनों की महिमा, भव्य हर्षकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 588॥

श्री जिनवर को भक्ति भाव से, जो देखा करते।
पूजा करते संस्तव करते, या चिंतन करते॥
तीन लोक में धन्य पुरुष वह, पूजित सुर-नर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 589॥

क्षपकराज तुम धन्य-धन्य हो, धन्य वीरता है।
कर्म युद्ध में डटे हुए हो, धन्य शूरता है॥
वीर वंश के वंशज हो तुम, निर्भय, निडर अहो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो॥ 590॥

श्रमण श्रुत सेवा संस्थान जयपुर

शाखा इन्दौर के परम संरक्षक व संरक्षक

परम संरक्षक

1. श्री टी.के. वेद–श्रीमती मंजु वेद, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
2. श्री प्रतिपाल–श्रीमती कुसुम टोंग्या, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
3. श्री निर्मल –श्रीमती मृदुला पाण्ड्या, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
4. श्री संजय –श्रीमती किरण गोधा, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
5. श्री सुरेश–श्रीमती मीना मेहता, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
6. श्री आनन्द–श्रीमती कल्पना जैन, उषा नगर, मेन रोड, इन्दौर
7. श्री रमेश–श्रीमती सुशीला सामरिया, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
8. श्री अशोक–श्रीमती सुनीता बड़जात्या, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
9. श्रीमती मधुदेवी, दीपेश–श्रीमती रुपाली गोधा, गुमाश्ता नगर, इन्दौर

संरक्षक

1. श्री सुभाष–श्रीमती निर्मला सेठिया, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
2. श्री वीरेन्द्र–श्रीमती सूरज देवी सिंघई, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
3. श्री नरेन्द्र–श्रीमती उर्मिला वेद, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
4. श्री सनतकुमार–श्रीमती आरती जैन, स्कीम नं.71, इन्दौर
5. श्रीमती तिलक ठोला, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
6. श्री प्रदीप–साधना झांझरी, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
7. श्री शांतिलाल–श्रीमती विमला अग्रवाल, गुमाश्ता नगर, इन्दौर
8. श्री विनय–श्रीमती आशा चौधरी, गुमाश्ता नगर, इन्दौर